युद्धकांडपत्र ६२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० १

श्रीगणेशायनमः॥श्रीमतेरामानुजायनमः॥श्लोक॥ ॥ रामंकामारिसेव्यंभवभयह
रणंकालमत्तेभसिंहं॥योगींद्रंज्ञानगम्यंगुणनिधिमजितंनिर्गुणंनिर्विकारं॥मा
यातीतंसुरेशंखलवधनिरतंब्रह्मवृंदैकदेवं॥वंदेकुंदावदातंसरसिजनयनंदेवमु
र्वीशरूपं॥१॥शंखेंद्वाभमतीवसुंदरतनुंशार्दूलचर्मांबरं॥कालव्यालकरालभूष
णधरंगंगाशशांकप्रियं॥काशीशंकलिकल्मषौघशमनंकल्याणकल्पद्रुमं॥नौ
मीड्यंगिरिजापतिंगुणनिधिंश्रीशंकरंमन्मथारिं॥२॥योददातिसतांशंभुःकैवल्य
मपिदुर्लभं॥खलानांदंडकृद्योसौशंकरःशंतनोतुमां॥३॥दोहा॥लवनिमेषपरमा
नुजुगवरषकलपसरचंड॥भजहिनमनतेहिरामकहुकालुजासुकोदंड॥सोरठा
सिंधुवचनसुनिरामसचिवबोलिप्रभुअसकहेउ॥अवविलंबकेहिकामकरहुसेतु १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उतरउ कटकु॥ सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह॥ नाथ नाम तव सेतु नर
चढि भवसागर तरहि॥ १॥ चौपाई॥ यह लघु जलधि तरत कति वारा॥ अस सुनि पुनि क
ह पवनकुमारा॥ प्रभु प्रताप बडवानल भारी॥ सोषेउ प्रथम पयोनिधि वारी॥ तव रिपु ना
रि रुदन जल धारा॥ भरेउ वहोरि भयउ तेहि षारा॥ सुनि अति उकति पवनसुत केरी॥ ह
रषे कपि रघुपति तन हेरी॥ जामवंत वोले दोउ भाई॥ नल नीलहि सब कथा सुनाई॥ राम
प्रताप सुमिरि मन माही॥ करहु सेतु प्रयास कछु नाही॥ वोलि लिए कपि निकर वहोरी
सकल सुनहु विनती कछु मोरी॥ राम चरन पंकज उर धरहू॥ कौतुक एक भालु कपि कर
हू॥ धावहु मर्कट विकट वरूथा॥ आनहु विटप गिरिन्ह के जूथा॥ सुनि कपि भालु चले करि
हूहा॥ जय रघुवीर प्रताप समूहा॥ दोहा॥ अति उतंग गिरि पादप लीलहि लेहि उ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० २

ठाइ॥ आनिदेहिनलनीलहिरचहितेसेतुबनाइ॥१॥ सैलबिसालआनिकपिदेहीं॥ कंदु
कइवनलनीलतेलेहीं॥ देखिसेतुअतिसुंदररचना॥ बिहसिकृपानिधिबोलेबचना॥ प
रमरम्यउत्तमयहधरनी॥ महिमाअमितजाइनहिबरनी॥ करिहौंइहांसंभुथापना
मोरेहृदयपरमकलपना॥ सुनिकपीसबहुदूतपठाए॥ मुनिबरसकलबोलिलैआ
ए॥ लिंगथापिबिधिवतकरिपूजा॥ सिवसमानप्रियमोहिनदूजा॥ सिवद्रोहीममभग
तकहावा॥ सोनरसपनेहुमोहिनपावा॥ संकरबिमुखभगतिचहमोरी॥ सोनारकीमूढ़
मतिथोरी॥ दोहा॥ः संकरप्रियममद्रोहीसिवद्रोहीममदास॥ तेनरकरहिकलपभरिघोर
नरकमहुबास॥२॥ जेरामेस्वरदरसनकरिहहि॥ तेतनुतजिममलोकसिधरिहहि॥ जोगं २
गाजलुआनिचढाइहि॥ सोसायुज्यमुक्तिनरपाइहि॥ होइअकामजोछलतजिसेइहि

भगतिमोरितेहिसंकरदेहही॥ ममकृतसेतुजोदरसनकरिही॥ सोविनुश्रमभवसागरत
रिही॥ रामवचनसवकेजियभाए॥ मुनिवरनिजनिजआश्रमआए॥ गिरिजारघुपतिके
यहरीती॥ संततकरहिप्रनतपरप्रीती॥ गिरिजारघुपतिकेयहरीती॥ संततकरहिप्रनत
परप्रीती॥ वांधासेतुनीलनलनागर॥ रामकृपाजसुभए उजागर॥ वूडहिआनहिवोर
हिजेई॥ भयेउपलवोहितसमतेई॥ महिमायहनजलधिकेवरनी॥ पाहनगुननकपि
न्हकेकरनी॥ दोहा॥ श्रीरघुवीरप्रतापतेसिंधुतरेपाषान॥ तेमतिमंदजेरामतजिभज
हिजाइप्रभुआन॥३॥ वांधिसेतुअतिसुदृढवनावा॥ देखिकृपानिधिकेमनभावा॥ चली
सेनकछुवरनिनजाई॥ गर्जहिमर्कटभटसमुदाई॥ सेतुवंधढिगचढिरघुराई॥ चितय
कृपालसिंधुवहुताई॥ देषनकहुप्रभुकरुनाकंदा॥ प्रगटभए सवजलचरवृंदा॥ मक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
३

रनक्रनानाझषब्याला॥सतयोजनतनपरमविसाला॥अैसेउएकतिन्हहिजेषाहीं॥एकन
केडरतेपिडेराहीं॥प्रभुहिविलोकहिंटरहिंनटारे॥मनहरषितसवभएसुषारे॥तिनकीवो
टनदेषियवारी॥मगनभएहरिरूपनिहारी॥चलाकटकप्रभुआयसुपाई॥कोकहिसककं
पिदलविपुलाई॥दोहा॥ सेतुवंधभइभीरअतिकपिनभपंथउडाहिं॥अपरजलचरन्ह
ऊपरचढिचढिपारहिजाहिं॥४॥असकौतुकविलोकिदोउभाई॥विहसिचलेकृपालर
घुराई॥सेनसहितउतरेरघुवीरा॥कहिनजाइकपिजूथपभीरा॥सिंधुपारप्रभुडेराकी
न्हा॥सकलकपिन्हकहुआयसुदीन्हा॥षाहुजायफलमूलसोहाए॥सुनतभालुकपि
जहंतहंधाए॥सवतरुफरेरामहितलागी॥रितुअरुकुरितुकालगतित्यागी॥षाहिंमधु
रफलविटपहलावहिं॥लंकासनमुषसिषरचलावहिं॥जहंकहुफिरतनिसाचरपाव ३

हिं॥धेरिसबकलवरुनाचनचावहिं॥दसननकाटिनासिकाकाना॥कहिप्रभुसुजसदे
हितबजाना॥जिन्हकरनासाकाननिपाता॥तिन्हरावनहिकहीसबबाता॥सुनतश्रव
नवारिधिबंधाना॥दसमुखबोलिउठाअकुलाना॥दोहा॥ःबांध्योबननिधिनीरनिधि
जलधिसिंधुवारीस॥सत्यतोयनिधिकंपतिउदधिपयोधिनदीस॥५॥निजबिकलता
विचारिबहोरी॥बिहसिगएउग्रहकरिभयभोरी॥मंदोदरीसुन्योप्रभुआयो॥कौतु
कहीपाथोधिबंधायो॥करगहिपतिहिभवननिजआनी॥वोलीपरममनोहरवानी
चरननाइसिरुअंचलरोपा॥सुनहुवचनपियपरिहरिकोपा॥नाथबैरुकीजेताहीसों
बुधिबलसकीयजीतिजाहीसों॥तुम्हहिरघुपतिहिअंतरकैसा॥खलुखद्योतदिनकरहि
८ जैसा॥अतिबलमधुकैंभजेहिमारे॥महावीरदितिसुतसंघारे॥जेहिबलिबांधिसहस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० ४

भुजमारा॥ सोइअवतरेउहरनममहिभारा॥ तासुविरोधनकीजियनाथा॥ कालकरमजि
वजाकेहाथा॥ दोहा॥ रामहिसौंपिजानकीनाइपदकमलमाथ॥ सुतकहुँराजसमर्पि
वनजाइभजिअरघुनाथ॥६॥ नाथदीनदयालरघुराई॥ वाघौसनमुखगएनखाई॥ चा
हियकरनसोसवकरिवीते॥ तुम्हसुरअसुरचराचरजीते॥ संतकहहिंअसिनीतिदसान
न॥ चौथेपनजाइहिनृपकानन॥ तासुभजनकीजियतहँभरता॥ जोकरतापालकसंहर
ता॥ सोइरघुवीरप्रनतअनुरागी॥ भजहुनाथममतासवत्यागी॥ मुनिवरजतनकरहि
जेहिलागी॥ भूपराजतजिहोहिंविरागी॥ सोइकोसलाधीसरघुराया॥ आएउकरनतोहि
परदाया॥ जौंपियमानहुमोरसिखावन॥ सुजसहोइतिहुँपुरअतिपावन॥ दोहा॥ अस ४
कहिनयननीरभरिगहिपदकंपितगात॥ नाथभजहुरघुनाथहिअचलहोइअहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बात॥ ७॥ अस रावन भय सुत उठाई॥ कहइ लाग खल निज प्रभुताई॥ सुनु तइ प्रिया बृ
था भय माना॥ बरुन कुबेर पवन जम काला॥ भुज बल जिते उ सकल दिगपाला॥ देव दनु
ज नर सब बस मोरें॥ कवन हेतु उपजा भय तोरें॥ नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई॥ सभा बहो
रि बैठ सो जाई॥ मंदोदरी हृदय अस जाना॥ काल बस्य उपजा अभिमाना॥ सभा आइ मं
त्रिन्ह तेहि बूझा॥ करब कवन बिधि रिपु से जूझा॥ कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा॥ बार बा
र प्रभु पूछहु काहा॥ कहहु कवन भय करिय बिचारा॥ नर कपि भालु अहार हमारा॥ दो
हा॥ सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि॥ नीति बिरोध न करिय प्रभु मंत्रिन्ह
मति अति थोरि॥ ८॥ कहहिं सचिव सठ ठकुर सोहाती॥ नाथ न पूर आव एहि भांती॥ बा
रिधि नांघि एक कपि आवा॥ तासु चरित मन महुं सब गावा॥ छुधा न रही तुम्हहि तब का

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ५ हू॥ जारतनगरुकसनधरिखाहू॥ सुनतनीकआगेदुषपावा॥ सचिवनअसमतप्रभुहिसु
नावा॥ जेहिवारीसवधायउहेला॥ उतरेसेनसमेतसुवेला॥ सोभनुमनुजखावहमभाई॥
वचनकहहिंसवगालफुलाई॥ तातवचनममसुनुअतिआदर॥ जनिमनगुनहुमो
हिकरिकादर॥ प्रियवानीजेसुनहिजेकहहीं॥ असेनरनिकायजगअहहीं॥ वचनपर
महितसुनतकठोरे॥ सुनहिजेकहहिंतेनरप्रभुथोरे॥ प्रथमवसीठपठवसुनुनीती
सीतादेइकरहुपुनिप्रीती॥ दोहा॥ नारिपाइफिरिजाहिजौंतौनवढाइअरारि॥ नाहि
तसनमुखसमरमहितातकरियहठिमारि॥ ८॥ यहमतजौंमानहुप्रभुमोरा॥ उभयप्र
कारसुजसजगतोरा॥ सुतसनकहदसकंठरिसाई॥ असिमतिसठकेहितोहिसिषाई॥ ५
अवहीतेउरसंसयहोई॥ वेनुमूलसुतभयहुघमोई॥ सुनिपितुगिरापरुषअतिघोरा॥

चलाभवनकहिब्चनकठोरा॥ हितमततोहिनलागतकैसे॥ कालविवसकहुभेषजजैसे
संध्यासमयजानिदससीसा॥ भवनचलेउनिरषतभुजवीसा॥ लंकासिषरउपरआगारा
अतिविचित्रतहँहोइअषारा॥ वैठजाइतेहिमंदिररावन॥ लागेकिंनरगुनगनगाव
न॥ वाजहिंतालपषाउजवीना॥ नृत्यकरहिंअपछराप्रवीना॥ दोहा॥: सुनासीरसत
सरिससोसंततकरइविलास॥ परमप्रवलरिपुसीसपरतदपिसोचनहित्रास॥ १०॥ इहाँ
सुवेलसैलरघुवीरा॥ उतरेसेनसहितअतिभीरा॥ सिषरएकउतंगअतिदेषी॥ परम
रम्यसमसुभ्रविसेषी॥ तहँतरुकिसलयसुमनसोहाए॥ लछिमनरचिनिजहाथ
डसाए॥ तापररुचिरमृदुलमृगछाला॥ तेहिआसनआसीनकृपाला॥ प्रभुकृतसी
सकपीसउछंगा॥ वामदहिनदिसिचापनिषंगा॥ दुहुँकरकमलसुधारतवाना॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ६

कहलंकेसमंत्रलगिकाना॥ बडभागीअंगदहनुमाना॥ चरनकमलचापतबिधिनाना।
प्रभुपाछेंलछिमनबीरासन॥ कटिनिषंगकरबानसरासन॥ दोहा॥ एहिबिधिकृपा
रूपगुनधामरामआसीन॥ धन्यतेनरएहिध्यानजेरहतसदालयलीन॥ पूरबदि
साबिलोकिप्रभुदेषाउदितमयंक॥ कहतसबहिदेषहुससिहिमृगपतिसरिसअ
संक॥ ११॥ पूरबदिसिगिरिगुहानिवासी॥ परमप्रतापतेजबलरासी॥ मत्तनागतमकुंभ
बिदारी॥ ससिकेसरीगगनबनचारी॥ बिथुरेनभमुकुताहलतारा॥ निसिसुंदरीकेरसिं
गारा॥ कहप्रभुससिमहुंमेचकताई॥ कहहुकाहनिजनिजमतिभाई॥ कहसुग्रीवसु
नहुरघुराई॥ ससिमहप्रगटभूमिकैझांई॥ मारेउराहुससिहिकहकोई॥ उरमहपरी ६
स्यामतासोई॥ कोउकहजबबिधिरतिमुखकीन्हा॥ सारभागससिकरहरिलीन्हा॥ छिद्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सोप्रगट इंदु उरमाहीं॥ तेहिमगदेखियतनभपरिछाहीं॥ प्रभुकहगरलबंधुससिकेरा।
अतिप्रियनिज उरदीन्हबसेरा॥ बिषसंजुतकरनिकरपसारी॥ जारतबिरहवंतनरनारी
॥दोहा॥ कहहनुमंतसुनहुप्रभुससितुम्हारप्रियदास॥ तवमूरतिबिधु उरबसतिसोई
स्यामताभास॥ पवनतनयकेबचनसुनिबिहसेरामसुजान॥ दछिनदिसिअवलोकिप्र
भुबोलेकृपानिधान॥१२॥ देखुबिभीषनदछिनआसा॥ घनघमंडदामिनीबिलासा॥ म
धुरमधुरगरजैघनघोरा॥ होइबृष्टिजनि उपलकठोरा॥ कहतबिभीषनसुनहुकृपाला
तडितनहोइनबारिदमाला॥ लंकासिखर उपरआगारा॥ तहँदसकंधरदेखअखारा॥
छत्रमेघडंबरसिरधारी॥ सोइजनुजलदघटाअतिकारी॥ मंदोदरीश्रवनताटंका॥ सो
इप्रभुजनुदामिनीदमंका॥ बाजहिंतालमृदंगअनूपा॥ सोइरवमधुरसुनहुसुरभू

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ७

पा॥ प्रभु मुसकान समुझि अभिमाना॥ चाप चढाइ बान संधाना॥ दोहा॥ छत्र मुकुट ताटं
क तब हते एकहीं बान॥ सब के देषत महि परे मरम न कोउ जान॥ अस कौतुक करि राम
सर प्रविसेउ आइ निषंग॥ रावन सभा ससंक सब देषि महा रसभंग॥ १३॥ कंपन भूमि न
मरुत विसेषा॥ अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देषा॥ सोचहि सब निज हृदय मझारी॥ असगु
न भएउ भयंकर भारी॥ दसमुष देषि सभा भय पाई॥ विहसि बचन कह जुगुति बनाई॥
सिरउ गिरे संतत सुभ जाही॥ मुकुट परे कस असगुन ताही॥ सैन करहु निज निज गृह
जाई॥ गवने भवन सकल सिर नाई॥ मंदोदरी सोच उर बसेउ॥ जब ते श्रवनपूर महि
षसेउ॥ सजल नयन कह जुग कर जोरी॥ सुनहु प्रानपति विनती मोरी॥ कंत राम विरो ७
ध परिहरहु॥ जानि मनुज जनि हठ मन धरहू॥ दोहा॥ विस्वरूप रघुवंसमनि करहु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वचनविश्वासु॥ लोककल्पनावेदकरअंगअंगप्रतिजासु॥१४॥ पदपातालसीसअज
धामा[अपरलोकअंगअंगविश्रामा]॥ भृकुटिबिलासभयंकरकाला॥ नयनदिवाकरकचघनमाला॥ जासुघ्रानअस्वि
नीकुमारा॥ निसिअरुदिवसनिमेषअपारा॥ श्रवनदिसादसवेदवषानी॥ मारुतस्वा
सनिगमनिजवानी॥ अधरलोभजमदसनकराला॥ मायाहासबाहुदिगपाला॥ आ
ननअनलअंबुपतिजीहा॥ उतपतिपालनप्रलयसमीहा॥ रोमराजिअष्टादसभारा॥
अस्थिसैलसरितानसजारा॥ उदरउदधिअधगोजातना॥ जगमयप्रभुकाबहुकल
पना॥ दोहा॥ अहंकारसिवबुद्धिअजमनससिचित्तमहान॥ मनुजवाससचराचररू
परामभगवान॥ असबिचारिसुनुप्रानपतिप्रभुसनबैरबिहाइ॥ प्रीतिकरहुरघुबीरपद
ममअहिवातनजाइ॥१५॥ बिहसानारिबचनसुनिकाना॥ अहोमोहमहिमाबलवा

लं०
८
ना॥ नारि सुभाउ सत्य कवि कहहीं॥ अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥ साहस अन्रत च
पलता माया॥ भय अविवेक असौच अदाया॥ रिपु कर रूप सकल तैं गावा॥ अति विसाल
भय मोहि सुनावा॥ सो सव प्रिया सहज वस मोरे॥ समुझि परा प्रसाद अव तोरे॥ जानेउँ
प्रिया तोरि चतुराई॥ एहि विधि कहहु मोरि प्रभुताई॥ तव वतकही गूढ मृगलोचनि
समुझत सुखद सुनत भय मोचनि॥ मंदोदरी मन महुँ अस ठएउ॥ पियहि काल व
स मति भ्रम भएउ॥ दोहा॥ एहि विधि करत विनोद वहु प्रात प्रगट दसकंध॥ सह
ज असंक लंकपति सभा गएउ मद अंध॥ सोरठा॥ फूलै फलै न वेत जदपि सुधा वरष
हि जलद॥ मूरुष हृदय न चेत जौं गुरु मिलहि विरंचि सिव॥ १६॥ इहा प्रात जागे रघुरा ८
ई॥ पूछा मत सव सचिव वुलाई॥ कहहु वेगि का करिय उपाई॥ जामवंत कह पद सिरु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाई॥ सुनु सर्वज्ञ सकल उरवासी॥ बुधि बल तेज धर्म गुन रासी॥ मंत्र कहौं निज मति
अनुसारा॥ दूत पठाइय बालिकुमारा॥ नीक मंत्र सब के मन माना॥ अंगद सन कह
कृपानिधाना॥ बालितनय बुधि बल गुन धामा॥ लंका जाहु तात मम कामा॥ बहुत बु
झाइ तुम्हहि का कहऊं॥ परम चतुर मै जानत अहऊं॥ काज हमार तासु हित होई॥
रिपु सन करेहु बतकही सोई॥ सोरठा॥ प्रभु अज्ञा धरि सीस चरन बंदि अंगद उठे
उ॥ सोई गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करहु॥ स्वयंसिद्ध सब काज नाथ मोहि आ
दर दियेउ॥ अस बिचारि जुवराज तन पुलकित हर्षित हियेउ॥ १७॥ बंदि चरन उ
र धरि प्रभुताई॥ अंगद चले सबहि सिर नाई॥ प्रभु प्रताप उर सहज असंका॥
रन बांकुरा बालिसुत बंका॥ पुर पैठत रावन कर बेटा॥ खेलत रहा सो होइ गौ भेटा॥ बात

हिवातकहौंवडिआई॥जुगलअतुलवलपुनितरुनाई॥तेहिअंगदकहुँलातउठा
लं० ९ ई॥गहिपदपटकेउभूमिभवाई॥निसिचरनिकरदेषिभटभारी॥जहँतहँचलेनस
कहिंपुकारी॥एकएकसननमरमनकहहीं॥समुझितासुवधचुपकरिरहहीं॥भए
उकोलाहलनगरमझारी॥आवाकपिलंकाजेहिंजारी॥अवधौंकाहकरिहिकरता
रा॥अतिसभीतसवकरहिंविचारा॥विनुपूछेमगुदेहिंदेषाई॥जेहिविलोकसोइ
जाइसुषाई॥दोहा॥ गएउसभादरवारतवसुमिरिरामपदकंज॥सिंघठवनिइत
उतचितवधीरवीरवलपुंज॥१८॥तुरतनिसाचरएकपठावा॥समाचाररावनहिज
नावा॥सुनतविहसिवोलादससीसा॥आनहुवोलिकहाकरकीसा॥आयसुपाइ ९
दूतवहुधाए॥कपिकुंजरहिवोलिलेइआए॥अंगददीषदसाननवैसे॥सहितप्रा

1

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नकज्जलगिरिजैसे॥ भुजाविटपसिरश्रृंगसमाना॥ रोमावलीलताजनुनाना॥ मुषना
सिकानयनअरुकाना॥ गिरिकंदराषोहअनुमाना॥ गयउसभामननेकुनमुरा॥ बा
लितनयअतिबलबाकुरा॥ उठेसभासदकपिकहुदेषी॥ रावनउरभाक्रोधविसेषी॥
दोहा॥ः जथामत्तगजजूथमहुपंचाननचलिजाइ॥ रामप्रतापसुमिरिमनवैठसभा
सिरुनाइ॥१९॥ कहदसकंठकवनतैवंदर॥ मैरघुवीरदूतदसकंधर॥ ममजनकहितो
हिरहीमिताई॥ तवहितकारनआयउभाई॥ उतमकुलपुलस्तिकरनाती॥ सिवविरं
चिपूजेहुवहुभाती॥ वरपायहुकीन्हेहुसवकाजा॥ जीतेहुलोकपालसवराजा॥ न्टप
अभिमानमोहवसकिंवा॥ हरिआनेहुसीताजगदंवा॥ अवसुभकहासुनहुतुम्हमो
रा॥ सवअपराधछमिहिप्रभुतोरा॥ दसनगहहुत्रिनकंठकुठारी॥ परिजनसहितसं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० १० गनिजनारी॥ सादरजनकसुताकरिआगे॥ रहिहिबिधिबलहुसकलभयत्यागे॥ दोहा॥
प्रनतपालरघुबंसमनित्राहित्राहिअबमोहि॥ आरतगिरासुनतप्रभुअभयकरहि
गेतोहि॥२०॥ रेकपिपोतनबोलुसंभारी॥ मूढनजानेहिमोहिसुरारी॥ कहुनिजना
मजनककरभाई॥ केहिनातेमानिऐमिताई॥ अंगदनामबालिकरबेटा॥ तासोकब
हुभईहीभेटा॥ अंगदबचनसुनतसकुचाना॥ रहाबालिबानरमैजाना॥ अंगदतही
बालिकरबालक॥ उपजेहुबंसअनलकुलघालक॥ गर्भनगएहुब्यर्थतुम्हजाएहु
रा निजमुखतापसदूतकहाएहु॥ अबकहुकुसलबालिकहँअहई॥ बिहसिबचनतबअं
गदकहई॥ दिनदसगएबालिपहिंजाई॥ बूझेहुकुसलसखाउरलाई॥ रामबिरोधकुस १०
लजसिहोई॥ सोसबतोहिसुनाइहिसोई॥ सुनुसठभेदहोइमनताके॥ श्रीरघुबीरहृद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यनहिंजाके॥ दोहा॥ः हमकुलघालकमत्यतुम्हकुलपालकदससीस॥ अंधोवधि
रनअसकहहिनयनकानतववीस॥ २९॥ सिवविरंचिसुरमुनिसमुदाई॥ चाहतजासु
चरनसेवकाई॥ तासुदूतह्वैहमकुलबोरा॥ अइसिहुमतिउरविहरुननोरा॥ सुनि
कठोरवानीकपिकेरी॥ कहतदसाननननयननतेरी॥ यलतवकठिनवचनसवसह
ऊं॥ नीतिधर्ममैजानतअहऊं॥ कहकपिधर्मसीलतातोरी॥ हमहुसुनीकृतप
रत्रियचोरी॥ देषीनयनदूतरषवारी॥ वूडिनमरहुधर्मव्रतधारी॥ काननाकवि
नुभगिनिनिहारी॥ छमाकीन्हतुम्हधर्मविचारी॥ धर्मसीलतानतवजगजागी॥ पावा
दससहमहुवडभागी॥ दोहा॥ः जौनिजल्पसिजडजंतुकपिसठविलोकुममवाहु॥ लो
कपालवलविपुलससिग्रसनहेतुसवराहु॥ पुनिनभसरममकरनिकरकमलन्हि

लं०
११ परकरिवास॥सोभटभरअभरालइवसंभुसहितकैलास॥२४॥तुम्हरेकटकमांकसुनु
अंगद॥मोसनभिरहिकवनजोधावद॥तवप्रभुनारिविरहवलहीना॥अनुजतासु
दुषदुषीमलीना॥तुम्हसुग्रीवकूलद्रुमदोउ॥अनुजहमारभीरुअतिसोउ॥जाम
वंतमंत्रीअतिवूढा॥सोकिहोइअवसमरारूढा॥सिल्पिकर्मजानहिनलनीला॥हैक
पिएकमहावलसीला॥आवाप्रथमनगरजेहिजारा॥सुनतवचनकहवालिकुमा
रा॥सत्यवचनकहुनिसिचरनाहा॥साचेहुकीसकीन्हपुरदाहा॥रावननगरअल्प
कपिदहई॥सुनिअसवचनसत्यकोकहई॥जोअतिसुभटसराहेहुरावन॥सोसुग्रीं
वकेरलघुधावन॥चलैवहुतसोवीरनहोई॥पठवाषवरिलेनहमसोई॥दोहा॥ सत्य ११
नगरकपिजारेउविनुप्रभुआयसुपाइ॥फिरिनगयोसुग्रींवपहितेहिभयरहालुका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इ॥ सत्य कहहिं दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह॥ को उ न हमारें कटक अस तो सन
लरत जो सोह॥ प्रीति बिरोध समान सन करियें नीति असि आहि॥ जद्यपि लघुता राम
कहुँ तोहि बधें बड दोष॥ तदपि कठिन दसकंठ सुनु छत्र जाति कर रोष॥ बक्र उक्ति ध
नु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस॥ प्रति उत्तर सडसिन्ह मनहु काढत भट दससी
स॥ हसि बोले उ दसमौलि तब कपि कर बड गुन एक॥ जो प्रतिपाले तासु हित करे उ
पाइ अनेक॥ २३॥ धन्य कीस जो निज प्रभु काजा॥ जहँ तहँ नाचै परिहरि लाजा॥ ना
चि कूदि करि लोग रिझाई॥ पति हित करै धरम निपुनाई॥ अंगद स्वामि भक्त तव जाती
प्रभु गुन कस न कहसि एहि भाँती॥ मै गुन गाहक परम सुजाना॥ तव कटु रटनि करौं न
हि काना॥ कह कपि तव गुन गाहकताई॥ सत्य पवन सुत मोहि सुनाई॥ बन बिधंसि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० १२ सुनत बधिपुर जमा॥ न दूषिन तेहि कछु कृत उपकारा॥ सोइ बिचारि तव प्रकृति सोहाई
दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई॥ देषेउँ आइ जो कछु कपि भाषा॥ तुम्हरे लाज न रोष न मा-
षा॥ जौं असि मति पितु षाए कीसा॥ कहि अस बचन हसा दससीसा॥ पितहि षाइ
षातेउँ पुनि तोही॥ अबही समुझि परा कछु मोही॥ बालि बिमल जस भाजन जानी॥
हतौं न तोहि अधम अभिमानी॥ कहु रावन रावन जग केते॥ मैं निज श्रवन सुने सुनु जे-
ते॥ बलिहि जितन एक गएउ पताला॥ राषेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला॥ षेलहिं बालक
मारहिं जाई॥ दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई॥ एक बहोरि सहसभुज देषा॥ धाइ धरा जि-
मि जंतु बिसेषा॥ कौतुक लागि भवन लै आवा॥ सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा॥ दोहा॥ १२
एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि की कांष॥ इन्ह महु रावन तैं कवन सत्य बदहि तजि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जिमि आइ ॥२४॥ सुनु सठ सोइ रावन बलसीला ॥ हरगिरि जान जासु भुज लीला ॥ जान उमाप
ति जासु सुराई ॥ पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढाई ॥ सिर सरोज निज करन्हि उतारी ॥ पूजेउँ अ
मित बार त्रिपुरारी ॥ भुज बिक्रम जानहिं दिगपाला ॥ सठ अजहू जिन्ह के उर साला ॥ जान
हिं दिग्गज उर कठिनाई ॥ जब जब भिरेउँ जाइ बरिआई ॥ जिन्ह के दसन कराल न फूटे ॥
उर लागत मूलक इव टूटे ॥ जासु चलत डोलति इमि धरनी ॥ चढत मत्त गज जिमि लघु तर
नी ॥ सोइ रावन जग बिदित प्रतापी ॥ सुनेहि न श्रवन अलीक प्रलापी ॥ दोहा ॥ तेहि रावन
कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान ॥ रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ज्ञान ॥२५॥ सु
नि अंगद सकोप कह बानी ॥ बोलु संभारि अधम अभिमानी ॥ सहसबाहु भुज गहन अपा
र ॥ दहन अनल सम जासु कुठारा ॥ जासु परसु सागर खर धारा ॥ बूडे नृप अगनित बहु बा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा॥ तासु गर्ब जेहि दिखत भागा॥ सो नर क्यों दससीस अभागा॥ राम मनुज कस रे सठ बंगा॥ ध
लं० न्वी कामु नदी पुनि गंगा॥ पसु सुरधेनु कल्पतरु रूषा॥ अन्नदान अरु रस पीयूषा॥ बैनतेय
१३ खग अहि सहसानन॥ चिंतामनि पुनि उपल दसानन॥ सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा॥ लाभ
कि रघुपति भक्ति अकुंठा॥ दोहा॥ सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि॥ कस रे स
ठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि॥ २६॥ सुनु रावन परिहरि चतुराई॥ भजसि कृपासिं न
धु रघुराई॥ जौं खल भयसि राम कर द्रोही॥ ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही॥ मूढ़ बृथा जनि मार
सि गाला॥ राम बयर अस होइहि हाला॥ तव सिर निकर कपिन के आगे॥ परिहहि धरनि
राम सर लागे॥ ते तव सिर कंदुक सम नाना॥ खेलिहहि भालु कीस चौगाना॥ जबहि समर १३
कोपिहि रघुनायक॥ छुटिहहि अति कराल बहु सायक॥ तब कि चलिहि अस गाल तुम्हा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा॥ अस बिचारि भजु राम उदारा॥ सुनत बचन रावन परजरा॥ जरत महानल जनु घृत परा।
दोहा॥: कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि॥ मोर पराक्रम नहि सुनेहि जितेउ च
राचर झारि॥ २७॥ सठ साखामृग जोरि सहाई॥ बांधा सिंधु इहै प्रभुताई॥ नाघहि खग अनेक
बारीसा॥ सूर न होहिं ते सुनु सठ कीसा॥ मम भुज सागर बल जल पूरा॥ जहं बूडे बहु सुर नर सू
रा॥ बीस पयोधि अगाध अपारा॥ को अस बीर जो पाइहि पारा॥ दिगपालन्ह मैं नीर भरावा॥
भूप सुजस खल मोहि सुनावा॥ जौं पै समर सुभट तव नाथा॥ पुनि पुनि कहसि जासु गुन गा
था॥ तौ बसीठ पठवत केहि काजा॥ रिपु सन प्रीति करत नहि लाजा॥ हरगिरि मथन निरखु
मम बाहू॥ पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू॥ दोहा॥: सूर कवन रावन सरिस स्वकर का
टि जेहि सीस॥ हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस॥ २८॥ जरत बिलोकेउ जबहि

लं० २४ कपाला॥ विधिके लिषे अंक निज भाला॥ नरके कर आपन बध बांची॥ हसेउँ जानि विधि गि
रा असांची॥ सेउ मन समुझि त्रास नहि मोरे॥ लिषा विरंचि जरठ मति भोरे॥ आन बीर बल
सठ मम आगे॥ पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागे॥ कह अंगद सलज्ज जग माहीं॥ रावन तो
हि समान कोउ नाहीं॥ लाजवंत तव सहज सुभाऊ॥ निज मुष निज गुन कहसि न काऊ॥
सिर अरु सैल कथा चित रही॥ ताते वार वीस तै कही॥ सो भुजबल राषेहु उर घाली॥ जीते
हु सहसबाहु बलि बाली॥ सुनु मतिमंद देहि अब पूरा॥ काटे सीस कि होइय सूरा॥ इंद्रजा
लि कहु कहिय न बीरा॥ काटइ निज कर सकल सरीरा॥ दोहा॥ जरहि पतंग मोह बस भा
र वहहिं षर वृंद॥ ते नहि सूर कहावहि समुझि देषु मतिमंद॥ ३५॥ अब जनि बतबढाव ष २४
ल करही॥ सुनु मम बचन मान परिहरही॥ दसमुष मैं न बसीठी आयउं॥ अस विचारि र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घुवीरपठाए ॥ ३ ॥ वारवारअसकहइकृपाला ॥ नहिगजारिजसुवधेहकाला ॥ मननमहृदसमु
ऊिवचनप्रभुकेरे ॥ सहेउकठोरवचनसठतेरे ॥ नाहितकरिमुखभंजननोरा ॥ लैजातेउंसी
तहिवरजोरा ॥ जानेउतवबलअधमसुरारी ॥ सूनेहरिआनेहिपरनारी ॥ तैनिसिचरपति
गर्ववहूता ॥ मैरघुपतिसेवककरदूता ॥ जौंनरामअपमानहिडरउं ॥ तोहिदेषतअसकौतु
ककरउं ॥ दोहा ॥ तोहिपटकिमहिसेनहतिचोपटकरितवगाउं ॥ तवजुवतिनसमेतसठ
जनकसुतहिलैजाउं ॥ ३ ॥ जौंअसकरौंतदपितवडाई ॥ मुएहिवधेनहिकछुमनुसाई
कौलकामवससृपिनविमूढा ॥ अतिदरिद्रअजसीअतिवूढा ॥ सदारोगवससंततक्रोधी ॥
विष्णुविमुखश्रुतिसंतविरोधी ॥ ततुपोषकनिंदकअघखानी ॥ जीवतसवसमचौदहप्रानी
असविचारिखलवधौंनतोही ॥ अवजनिरिसउपजावसिमोही ॥ सुनिसकोपकहनिसिचर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० १५ नाथ्या॥ अधर दसन डसि मीजत हथ्या॥ रे कपि अधम मरन अव चहसी॥ छोटे वदन वा
त वडि कहसी॥ कटु जलपसि जड कपि वल जाके॥ वल प्रताप वुधि तेज न ताके॥ दोहा॥:
अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता वनवास॥ सो दुष अरु जुवती विरह पुनि निसिदिन
मम त्रास॥ जिन्ह के वल कर गर्व तोहि अइसे मनुज अनेक॥ षाहि निसाचर दिवस निसि
मूढ समुझु तजि टेक॥ ३१॥ जव तेहि कीन्हि राम कै निंदा॥ क्रोधवंत अति भएउ कपिंदा॥ ह
रि हर निंदा सुनहि जो काना॥ होइ पाप गोघात समाना॥ कटकटान कपिकुंजर भारी॥ दु
हु भुज दंड तमकि महि मारी॥ डोलत धरनि सभासद षसे॥ चले भाजि भय मारुत ग्रसे॥
गिरत संभारि उठा दसकंधर॥ भूतल परे मुकुट अति सुंदर॥ कछु तेहि लै निज सिरन्हि संवा
रे॥ कछु अंगद प्रभु पास पवारे॥ आवत मुकुट देषि कपि भागे॥ दिन ही लूक परन विधि १५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लागे॥ कौरावनकरिकोपचलाए॥ कुलिसचारिआवतअतिधाए॥ कहप्रभुहसिजनिहृद
यडराहू॥ लूकनअसनिकेतुनहिराहू॥ एकिरीटदसकंधरकेरे॥ आवतबालितनयकेप्रे
रे॥ दोहा॥ तरकिपवनसुतकरगहेउआनिधरेप्रभुपास॥ कौतुकदेखहिभालुकपिदिन
करसरिसप्रकास॥ उहांसकोपदसाननसबसनकहतरिसाइ॥ धरहुकपिहिधरिमारहु
सुनिअंगदमुसुकाइ॥ उँ॥ एहिबिधिबेगिसुभटसबधावहु॥ खाहुभालुकपिजहँजहँपा
वहु॥ मरकटहीनकरहुमहिजाई॥ जियतधरहुतापसदोउभाई॥ पुनिसकोपबोलेउ
जुवराजा॥ गालबजावततोहिनलाजा॥ मरुगरकाटिनिलजकुलघाती॥ बलबिलोकिबि
हरतिनहिछाती॥ रेत्रियचोरकुमारगगामी॥ खलमलरासिमंदमतिकामी॥ सन्निपा
तजल्पसिदुर्बादा॥ भयसिकालबसखलमनुजादा॥ याकोफलुपावहुगेआगे॥ बानरभा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लषिपेटन्हिलागे॥ राममनुजबोलतअसिबानी॥ गिरहिंनतवरसनाअभिमानी॥ गिरिहं
हिंरसनासंसयनाहीं॥ सिरन्हिसमेतसमरमहिमाहीं॥ सोरठा॥: सोनरक्योंदसकंधबा
लिबध्योजेहिंएकसर॥ बीसहुलोचनअंधधिगतवजन्मकुजातिजड॥ तवसोनितकीप्या
सत्रषितरामसायकनिकर॥ तजौंतोहितेहित्रासकटुजल्पकनिसिचरअधम॥३३॥ मै
तवदसनतोरिबेलायक॥ आयसुमोहिनदीन्हिरघुनायक॥ असरिसहोतिदसौमुषतो
रौं॥ लंकागहिसमुद्रमहंबोरौं॥ गूलरिफलसमानतवलंका॥ वसहुमध्यतुम्हजंतुअसंका॥
मैवानरफलषातनवारा॥ आयसुदीन्हनरामउदारा॥ जुगुतिसुनतरावनमुसुकाई॥ मू
ढसीषकहंबहुतझुठाई॥ वालिनकबहुंगालअसमारा॥ मिलितपसिन्हतैभएसिलवारा॥
साचेहुंमैलवारभुजवीहा॥ जौंनउपारहुंतवदसजीहा॥ समुझिरामप्रतापकपिकोपा॥ स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भामांरूपनकरिपदरोपा॥ जौंमम चरनसकसिसठटारी॥ फिरहिंरामसीतामैहारी॥ सुनहु
सुभटसबकहदससीसा॥ पदगहिधरनिपछारहुकीसा॥ इंद्रजीतआदिकबलवाना॥ हर
षिउठेजहंतंहंभटनाना॥ झपटहिंकरिबलविपुलउपाई॥ पदनटरैवैठहिंसिरुनाई॥ पु
निउठिझपटहिंसुरआराती॥ टरैनकीसचरनएहिभांती॥ पुरुषकुजोगीजिमिउरगारी
मोहविटपनहिंसकहिंउपारी॥ दोहा॥ः कोटिन्हमेघनादसमसुभटउँहरषाइ॥ झपटहिं ठे
टरैनकपिचरनपुनिवैठहिंसिरुनाइ॥ भूमिनछाडतकपिचरनदेषतरिपुमदभाग॥ कोटि
विघ्नतेसंतकरमनजिमिनीतिनत्याग॥ ३४॥ कपिबलदेषिसकलहियहारे॥ उठाआपुक
पिकेपरचारे॥ गहतचरनकहबालिकुमारा॥ ममपदगहेंनतोरउबारा॥ गहसिनरामच
रनसठजाई॥ सुनतफिरामनअतिसकुचाई॥ भयउतेजहतश्रीसबगाई॥ मध्यदिवसजि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० मिसमसिसोहई॥ सिंहासनवइठेउसिरनाई॥ मानहुसंपतिसकलगँवाई॥ जगदातमाप्रान
२७ पतिरामा॥ तासुविमुषकिमिलहविश्रामा॥ उमारामकीभृकुटिविलासा॥ होइविश्वपुनि
पावैनासा॥ त्रनतेकुलिसकुलिसत्रनकरई॥ तासुदूतपनकहुकिमिटरई॥ पुनिकपिक
हीनीतिविधिनाना॥ माननताहिकालुनियराना॥ रिपुमदमथिप्रभुसुजससुनायो॥ य
हकहिचल्योवालिन्रपजायो॥ हतौंनषेतषेलाइषेलाई॥ तोहिअवहिकाकरौंवडाई॥
प्रथमहितासुतनयकपिमारा॥ सोसुनिरावनभयउदुषारा॥ जातुधानअंगदपनदेषी॥ भ ७
यव्याकुलसवभएविसेषी॥ दोहा॥ रिपुवलधरषिहरषिकपिवालितनयवलपुंज॥ पुलक
सरीरनयनजलगहेरामपदकंज॥ सांझजानिदसकंधरभवनगएविलषाइ॥ मंदोदरीरा २७
वनहिवहुरिकहासमुझाइ॥ ३५॥ कंतसमुझिमनतजहुकुमतिही॥ सोहनसमरतुम्हहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रघुपतिहि॥ रामानुज लघु रेष षचाई॥ सोउ नहि नांघेउ असि मनुसाई॥ पिय तुम ताहि
जितव संग्रामा॥ जाके दूत केर यह कामा॥ कौतुक सिंधु नाघि तव लंका॥ आएउ कपि केह
री असंका॥ रषवारे हति बिपिन उजारा॥ देषत तोहि अछ तेहि मारा॥ जारि सकल पुर की
न्हेसि छारा॥ कहां रहा बल गर्व तुम्हारा॥ अब पति म्रषा गाल जनि मारहु॥ मोर कहा कछु
हृदय विचारहु॥ पति रघुपतिहि न्रपति जनि मानहु॥ अगजग नाथ अतुल बल जानहु
बान प्रताप जान मारीचा॥ तासु कहा नहि मानेहु नीचा॥ जनक सभा अगनित भुअपा
ला॥ रहे तुम्हौ बल अतुल बिसाला॥ भंजि धनुष जानकी बिवाही॥ तब संग्राम जितेहु कि
न ताही॥ सुरपति सुत जानै बल थोरा॥ राषा जियत आंषि गहि फोरा॥ सूपनषा कै गति
तुम्ह देषी॥ तदपि हृदय नहि लाज विसेषी॥ दोहा॥ बधि बिराध षर दूषनहि लीला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० १८ हत्यौकवंध॥ वालिएकसरमारयौतेहिजानहुदसकंध॥ ३६॥ जेहिजलनाथबधायउहेला
उतरेप्रभुदलसहितसुवेला॥ कारुनीकदिनकरकुलकेतू॥ दूतपठायौतवहितहेतू॥ स
भामांझजेहितवबलमथा॥ करिवरूथमहमृगपतिजथा॥ अंगदहनुमतअनुचरजा
के॥ रनबांकुरेवीरअतिबांके॥ तेहिकहपियपुनिपुनिनरकहहू॥ मुधामानममतामद
वहहू॥ अहहकंतकृतरामविरोधा॥ कालविवसमनउपजनबोधा॥ कालदंडगहिका
हुनमारा॥ हरैधर्मवलबुद्धिविचारा॥ निकटकालजेहिआवतसांईं॥ तेहिभ्रमहोइतु
म्हारिहिनांईं॥ दोहा॥ दुइसुतमारेउदहेउपुरअजहुपूरपियदेहु॥ कृपासिंधुरघुना
थभजिनाथविमलजसलेहु॥ ३७॥ नारिवचनसुनिविसिखसमाना॥ सभागएउउठिहो
तविहाना॥ वैठजाइसिंहासनफूली॥ अतिअभिमानत्राससवभूली॥ इहांरामअंगदहि १८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बोलावा॥ आइ चरन पंकज सिरु नावा॥ अति आदर समीप बैठारी॥ बोले बिहसि कृपाल षरारी
बालितनय अति कौतुक मोही॥ तात सत्य कहु पूछउँ तोही॥ रावन जातुधान कुल टीका॥ भु
जबल अतुल जासु जग लीका॥ तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए॥ कहहु तात कवनी बिधि पाए
सुनु सर्बज्ञ प्रनत सुषकारी॥ मुकुट न होहिं भूप गुन चारी॥ साम दान अरु दंड बिभेदा॥ नृ
प उर बसहिं नाथ कह बेदा॥ नीति धर्म के चरन सोहाए॥ अस जिय जानि नाथ पहिं आए॥ दो
हा॥ धर्म हीन प्रभु पद बिमुष काल बिबस दससीस॥ तेहि परिहरि गुन आए सुनहु कोस
लाधीस॥ परम चतुरता श्रवन सुनि बिहसे राम उदार॥ समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालि
कुमार॥ ३५॥ रिपु के समाचार जब पाए॥ राम सचिव सब निकट बोलाए॥ लंका बाँके चारि दु
वारा॥ केहि बिधि लागिय करहु बिचारा॥ तब कपीस रिछेस बिभीषन॥ सुमिरि हृदय दि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० १९ नकरकुलभूषन॥ करिबिचारतिन्हमंत्रदिढावा॥ चारिअनीकपिकटकबनावा॥ जथाजो
गसेनापतिकीन्हे॥ जूथपसकलबोलितबलीन्हे॥ प्रभुप्रतापकहिसबसमुझाए॥ सुनिक
पिसिंहनादकरिधाए॥ हरषितरामचरनसिरनावहि॥ गहिगिरिसिषरबीरसबधावहि
गर्जहितर्जहिभालुकपीसा॥ जयरघुबीरकोसलाधीसा॥ जानतपरमदुर्गअतिलंका॥
प्रभुप्रतापकपिचलेअसंका॥ घटाटोपकरिचहुदिसिघेरी॥ मुषहिनिसानबजावहि
भेरी॥ दोहा॥ जयतिरामजयलछिमनजयकपीससुग्रीवं॥ गर्जहिसिंहनादकपिभा
लुमहाबलसींवं॥ ३९॥ लंकाभएउकोलाहलभारी॥ सुनादसाननअतिअहंकारी
देषहुबनरनकेढिठाई॥ बिहसिनिसाचरसैनबोलाई॥ आएकीसकालकेप्रेरे॥ छु १९
धांवतसबनिसिचरमेरे॥ असकहिअट्टहासमठकीन्हा॥ गृहबैठेअहारबिधिदीन्हा॥

धरि सुभटसकलचारिहुदिसिजाहू॥धरिँभालुकीससबषाहू॥उमारावनहिअससअभिमाना॥
जिमिटिंडिभषगसूतउताना॥चलेनिसाचरआयसुमांगी॥गहिकरभिंडिपालबरसाँ
गी॥तोमरमुदगरपरसुप्रचंडा॥सूलकृपानपरिघगिरिषंडा॥जिमिअरुनोपलनिकरनिहा
री॥धावहिंसठषगमाससअहारी॥चोंचभंगदुषतिन्हहिनसूझा॥तिमिधाएमनुजादअबू
झा॥दोहा॥नानायुधसरचापधरजातुधानबलबीर॥कोटकँगूरन्हिचढिगएकोटिको
टिरनधीर॥४०॥कोटकँगूरन्हिसोहहिंकैसे॥मेरुकेशृंगनिजनुघनबैसे॥बाजहिढोल
निसानजुझाऊ॥सुनिधुनिहोइभटन्हिमनचाऊ॥बाजहिभेरिनफीरिअपारा॥सुनिका
दरउरजाहिंदरारा॥देषिनजाइकपिनकेठट्टा॥अतिबिसालतनभालुसुभट्टा॥धावहि
गनहिनअवघटघाटा॥पर्बतफोरिकरहिगहिबाटा॥कटकटाहिकोटिन्हभटगर्जहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
४०

दसनअोठकाटहिंअतितर्जहिं॥ उतरावनइतरामदोहाई॥ जयतिजयतिजयपरील
राई॥ निसिचरसिषरसमूहढवलावहिं॥ कूदिधरहिंकपिफेरिचलावहिं॥ छंद॥ धरिकु
धरषंडप्रचंडमर्कटभालुगढपरडारहीं॥ झपटहिंचरनगहिपटकिमहिभजिचलत
वहुरिप्रचारहीं॥ अतितरलतरुनप्रतापतर्पहिंतमकिगढचढिचढिगए॥ कपिभालु
चढिमंदिरन्हिजहंतहंरामजसुगावतभए॥ दोहा॥ एकएकनिसिचरगहि[illegible]पुनि
कपिचलेपराइ॥ ऊपरआपुहेठभटगिरहिंधरनिपरआइ॥ ४१॥ रामप्रतापप्रवलक
पिजूथा॥ मर्दहिंनिसिचरसुभटवरूथा॥ चढेदुर्गपुनिजहंतहंवानर॥ जयरघुवीरप्र
तापदिवाकर॥ चलेनिसाचरनिकरपराई॥ प्रवलपवनजिमिघनसमुदाई॥ हाहाका ४०
रभएउपुरभारी॥ रोवहिंवालकआतुरनारी॥ सवमिलिदेहिंरावनहिगारी॥ राजकरतए

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हि मटन्यु हकारी ॥ निज दल विकल सुनी तेहि काना ॥ फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥ जो रन
विमुख फिरा मै जाना ॥ सो मै हतव कराल कृपाना ॥ सरवसु षाइ भोग करि नाना ॥ समर भूमि
भए वल्लभ प्राना ॥ उग्र वचन सुनि सकल डेराने ॥ चले क्रोध करि सुभट लजाने ॥ सन्मु
ष मरन वीर कै सोभा ॥ तव तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥ दोहा ॥ वहु आयुध धर सुभट सव
भिरहि पचारि पचारि ॥ व्याकुल कीन्हे भालु कपि परिघ त्रिसूलन मारि ॥४१॥ भय आतुर
कपि भागन लागे ॥ जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे ॥ कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता ॥ कहँ
नल नील दुविद वलवंता ॥ निज दल विकल सुना हनुमाना ॥ पश्चिम द्वार रहा वलवाना ॥
मेघनाद तहँ करै लराई ॥ टूट न द्वार परम कठिनाई ॥ पवनतनै मन भा अति क्रोधा ॥ गर्जे
उ प्रवल काल सम जोधा ॥ कूदि लंक गढ ऊपर आवा ॥ गहि गिरि मेघनाद कहुँ धावा ॥ भं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
२१

जेउरथसारथीनिपाता॥ नाहिहृदयमहुमारेसिलाता॥ दुसरेसूतविकलतेहिजाना॥
स्यंदनघालितुरतग्रहआना॥ दोहा॥ अंगदसुनापवनसुतगढपरगएउअकेल॥ र
नवांकुरावालिसुततरकिचढेउकपिषेल॥४३॥ जुद्धविरुद्धक्रुद्धद्वौबानर॥ रामप्रताप
सुमिरिउरअंतर॥ रावनभवनचढेद्वौधाई॥ करहिकोसलाधीसदोहाई॥ कलससहि
तगहिभवनढहावा॥ देषिनिसाचरपतिभयपावा॥ नारिवृंदकरपीटहिछाती॥ अब
दुइकपिआएउतपाती॥ कपिलीलाकरितिन्हहिडेरावहि॥ रामचंद्रकरसुजससुनाव
हि॥ पुनिकरगहिकंचनकेषंभा॥ कहेन्हिकरियउतपातअरंभा॥ गर्जिपरेरिपुकटक
मझारी॥ लागेमर्दइभुजवलभारी॥ काहुहिलातचपेटन्हकेहू॥ भजहुनरामहिसोफ २१
ललेहू॥ दोहा॥ एकएकसोंमर्दहितोरिचलावहिमुंड॥ रावनआगेपरहितेजनुफूटहि

दधिकुंड॥४४॥महामहामुषियाजेपावहि॥तेपदगहिप्रभुपासचलावहि॥कहहिबि-
भीषनतिन्हकेनामा॥देहिरामतिन्हहूनिजधामा॥षलमनुजादद्विजामिषभोगी॥पाव-
हिगतिजोजाचतजोगी॥उमाराममृदुचितकरुनाकर॥बयरभावसुमिरतमोहिनिसि-
चर॥देहिपरमगतिसोजियजानी॥असकृपालकोकहहुभवानी॥असप्रभुसुनिनभज-
हिभ्रमत्यागी॥नरमतिमंदतेपरमअभागी॥अंगदअरुहनुमंतप्रवेसा॥कीन्हदुर्गअ-
सकहअवधेसा॥लंकाद्वौकपिसोहहिकैसे॥मथहिंसिंधुदुइमंदरजैसे॥दोहा॥॥भु-
जबलरिपुदलदलमलिदेषिदिवसकरअंत॥कूदेजुगलबिगतश्रमआएजहँभगवंत
४५॥प्रभुपदकमलसीसतिन्हनाए॥देषिसुभटरघुपतिमनभाए॥रामकृपाकरिजुग-
लनिहारे॥भएबिगतश्रमपरमसुषारे॥गएजानिअंगदहनुमाना॥फिरेभालुमर्कटभ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० टनाना॥जातुधानप्रदोषबलपाई॥धाएकरिदससीसदोहाई॥निसिचरअनीदेखिक
२२ पिफिरे॥जहँतहँकटकटाइभटभिरे॥द्वौदलप्रबलपचारिपचारी॥लरतसुभटनहिं
मानहिंहारी॥महाबीरनिसिचरसबकारे॥नानाबरनबलीमुषभारे॥सबलजुगलदल
समबलजोधा॥कौतुककरतलरतकरिक्रोधा॥प्राबिटसरदपयोदघनेरे॥लरतमनहुँ
मारुतकेप्रेरे॥अनिपअकंपनअरुअतिकाया॥बिचलतसेनकीन्हिइन्हमाया॥भय
उनिमिषमहँअतिअँधियारा॥ब्रिष्टिहोइरुधिरोपलछारा॥दोहा॥ देषिनिबिडत
मदसहुँदिसिकपिदलभयउषभार॥एकेहिएकनदेषइजहँतहँकरहिंपुकार॥४६॥
सकलमरमरघुनायकजाना॥लिएबोलिअंगदहनुमाना॥समाचारसबकहिसमुझा २२
ए॥सुनतकोपिकपिकुंजरधाए॥पुनिकृपालहसिचापचढावा॥पावकसायकसपदि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चलावा॥ भएउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं॥ ज्ञान उदय जिमि संसय जाहीं॥ भालु बलीमुष
पाइ प्रकासा॥ धाए हरषि बिगत श्रम त्रासा॥ हनूमान अंगद रन गाजे॥ हाँक सुनत रज
नीचर भाजे॥ भागत भट पटकहिं धरि धरनी॥ करहिं भालु कपि अद्भुत करनी॥ गहि पद
डारहिं सागर माहीं॥ मकर उरग झष धरि धरि षाहीं॥ दोहा॥ कछु मारे कछु घायल कछ
गढ़ चढ़े पराइ॥ गर्जहिं भालु बलीमुष रिपु दल बल बिचलाइ॥ ४७॥ निसा जानि कपि
चारिउ अनी॥ आए जहाँ कोसलाधनी॥ राम कृपा करि चितवा जबहीं॥ भए बिगत श्रम बा
नर तबहीं॥ उहाँ दसानन सचिव हँकारे॥ सब सन कहेसि सुभट जे मारे॥ आधा कटक कपि
न्ह संघारा॥ कहहु बेगि का करिय बिचारा॥ माल्यवंत अति जरठ निसाचर॥ रावन मातु पिता
मंत्री बर॥ बोला बचन नीति अति पावन॥ सुनहु तात कछु मोर सिषावन॥ जब ते तुम्ह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सीता हरि आनी॥ अस गुन होहिं न जाहिं बखानी॥ बेद पुरान जासु जस गायो॥ राम बिमु
लं० २३ षकाहु न सुष पायो॥ दोहा॥ हिरन्याक्ष भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान॥ जेहि मारे
सोइ अवतरे कृपासिंधु भगवान॥ कालरूप षल बन दहन गुनागार घनबोध॥ सिव
बिरंचि जेहि सेवहिं तासों कवन बिरोध॥ ४८॥ परिहरि बैर देहु बैदेही॥ भजहु कृपानिधि
परम सनेही॥ ताके बचन बान सम लागे॥ करिया मुष करि जाहि अभागे॥ बूढ भयसि न त
मरतेउँ तोही॥ अब जनि नयन दिषावसि मोही॥ तेहिं अपने मन अस अनुमाना॥ बध्यो
७ चहत एहि कृपानिधाना॥ सो उठि गयउ कहत दुर्बादा॥ तब सकोप बोलेउ घननादा॥ कौ
तुक प्रात देषिअहु मोरा॥ करिहौं बहुत कहौं का थोरा॥ सुनि सुत बचन भरोसा आवा॥ प्री २३
ति समेत अंक बैठावा॥ करत बिचार भएउ भिनुसारा॥ लागे कपि पुनि चहुँ दुआरा॥ को

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पिकपिनदुरघुरा ठघेरा॥ नगरकोलाहलभएउघनेरा॥ विविधायुधधरिनिसिचर
धार॥ गढतेपर्वतसिषरढहार॥ छंद ॥ः ढाहेमहीधरसिषरकोटिन्हविविधविधि
गोलाचले॥ घहरातजिमिपविपातगर्जतजनुप्रलयकेवादले॥ मर्कटविकटभटजुट
तकटतनलटततनजर्जरभए॥ गहिसैलतेहिगढपरचलावहिजहंसोतहंनिसिचर
हए॥ दोहा॥ः मेघनादसुनिश्रवनअसगढपुनिछेकाआइ॥ उतर्यौवीरदुर्गतेंसन्मु
षचलेउवजाइ॥ ४९॥ कहंकोसलाधीसदोउभ्राता॥ धन्वीसकललोकविख्याता॥ क
हंनलनीलदुविदसुग्रीवा॥ अंगदहनूमंतवलसींवा॥ कहांविभीषनभ्राताद्रोही॥
आजुसवहिहठिमारौंवोही॥ असकहिकठिनवानसंधाने॥ अतिसैक्रोधश्रवनलगिता
ने॥ सरसमूहसोछाडैलागा॥ जनुसपक्षधावहिवहुनागा॥ जहंतहंपरतदेषिअहिवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
२४

नर॥सन्मुषहोइनसकैतेहिअवसर॥जहँतँहँभागिचलेकपिरीछा॥बिसरीसबहिंजुद्धकै
ईछा॥सोकपिभालुनरनमहँदेषा॥कीन्हेसिजेहिनप्रानअवसेषा॥दोहा॥:दसदससर
सबमारेसिपरेभूमिकपिबीर॥सिंहनादकरिगर्ज्जामेघनादबलधीर॥५०॥देषिपवनसु
तकटकबिहाला॥क्रोधवंतजनुधायउकाला॥महासैलएकतुरतउपारा॥अतिरिसमे
घनादपरडारा॥आवतदेषिगयउनभसोई॥रथसारथीतुरगसबषोई॥बारबारपचार
हनुमाना॥निकटनआवमरमुसोजाना॥रघुपतिनिकटगयउघननादा॥नानाभाँतिक
रेसिदुर्बादा॥अस्त्रसस्त्रआयुधसबडारे॥कौतुकहींप्रभुकाटिनिवारे॥देषिप्रतापमूढ
षिसिआना॥करैलागमायाबिधिनाना॥जिमिकोउकरैगरुडसैंषेला॥डरपावैगहि २४
स्वल्पसपेला॥दोहा॥:जासुप्रबलमायाबससिवबिरंचिबडछोट॥ताहिदिषावैनिसिचर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निजमायामतिघोर ॥ ५१ ॥ नभचढिवरषविपुलअंगारा ॥ महितेप्रगटहोहिंजलधारा ॥
नानाभाँतिपिसाचपिसाची ॥ मारुकाटुधुनिबोलहिनाची ॥ बिष्टापूयरुधिरकचहाडा ॥ बर
षैकबहुउपलबहुछाडा ॥ बरषिधूरिकीन्हेसिअँधिआरा ॥ सूझनआपनहाथपसारा ॥ क
पिअकुलानेमायादेखे ॥ सबकरमरनबनाएहिलेखे ॥ कौतुकदेखिरामुमुसुकाने ॥ भए
सभीतसकलकपिजाने ॥ एकबानकाटीसबमाया ॥ जिमिदिनकरहरतिमिरनिकाया ॥ कृ
पाद्रिष्टिकपिभालुबिलोके ॥ भएप्रबलरनरहहिंनरोके ॥ दोहा ॥ आयसुमांगिरामपहि
अंगदादिकपिसाथ ॥ लछिमनचलेक्रुद्धह्वैबानसरासनहाथ ॥ ५२ ॥ छतजनयनउर
बाहुबिसाला ॥ हिमगिरिनिभतनुकछुएकलाला ॥ इहाँदसाननसुभटपठाए ॥ नाना
अस्त्रसस्त्रगहिधाए ॥ भूधरनखबिटपायुधधारी ॥ धाएकपिजयरामपुकारी ॥ भिरेसक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
२५

लजोरिहिसनजोरी॥ इतउतजयइछानहिथोरी॥ मुठिकन्हलातन्हदातन्हकाटहिं॥
कपिजयसीलमारिपुनिडाटहिं॥ मारुमारुधरुधरुधरुमारु॥ सीसतोरिगहिभुजाउपारु
असिरवपूरिरहीनवषंडा॥ धावहिंजहँतहँरुंडप्रचंडा॥ देषहिंकौतुकनभसुरबृंदा॥ क
बहुँकबिसमयकबहुँअनंदा॥ दोहा॥ रुधिरगाडभरिभरिजम्यो ऊपरधूरिउडाइ॥ ज
नुअंगाररासिन्हपरमृतकधूमरह्यौछाइ॥ ५५॥ घायलबीरबिराजहिंकैसे॥ कुसुमित
किंसुककेतरुजैसे॥ लछिमनमेघनाददोउजोधा॥ भिरहिंपरसपरकरिअतिक्रोधा॥ ए
कहिएकसकैनहिजीती॥ निसिचरछलबलकरैअनीती॥ क्रोधवंततवभयेअनंता॥ भं
जेउरथसारथीतुरंता॥ नानाबिधिप्रहारकरसेषा॥ राक्षसभयेप्रानअवसेषा॥ रावनसु उ २५
तनिजमनअनुमाना॥ संकटभएउहरिहिममप्राना॥ बीरघातिनीछाडेसिसांगी॥ ते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जपुंजलछिमनउरलागी॥ मुरछाभईसक्तिकेलागे॥ तवचलिगएउनिकटभयत्यागे॥
दोहा॥ मेघनादसमकोटिसतजोधारहेउठाइ॥ जगदाधारसेषकिमिउठैचलेखिसिआ
इ॥५४॥ सुनुगिरिजाक्रोधानलजासू॥ जारैभुवनचारिदसआसू॥ सकसंग्रामजीतिकोता
ही॥ सेवहिंसुरनरअगजगजाही॥ यहकौतूहलजानैसोई॥ जापरकृपारामकेहोई॥ संध्या
भईफिरीद्वौवाहनी॥ लगेसंभारननिजनिजअनी॥ व्यापकब्रह्मअजितभुवनेश्वर॥ ल
छिमनकहांबूझकरुनाकर॥ तवलगिलेइआएउहनुमाना॥ अनुजदेषिप्रभुअतिदुष
माना॥ जामवंतकहवैदसुषेना॥ लंकारहैकोपठईलेना॥ धरिलघुरूपगएउहनुमंता॥ आ
नेउभवनसमेततुरंता॥ दोहा॥ रामपदारविंदसिरनायोआइसुषेन॥ कहानामगिरिऔ
षधीजाहुपवनसुतलेन॥५५॥ रामचरनसरसिजउरराषी॥ चलाप्रभंजनसुतवलभाषी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं° २६

उहाँ दूत एक मरम जनावा॥ रावनु कालनेमि गृह आवा॥ दसमुख कहा मरम तेहि सुना
पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना॥ देखत तुम्हहि नगरु जेहि जारा॥ तासु पंथ को रोकन पारा॥
भजि रघुपति करु हित आपना॥ छाडहु नाथ म्रषा जल्पना॥ नील कंज तनु सुंदर स्यामा॥
हृदय राखु लोचनाभिरामा॥ मैं तैं मोर मूढता त्यागू॥ महा मोह निसि सूतत जागू॥ काल
ब्याल कर भक्षक जोई॥ सपनेहु समर कि जीतिय सोई॥ दोहा॥: सुनि दसकंठ रिसान अ
ति तेहि मन कीन्ह बिचार॥ राम दूत कर मरौं बरु यह खल रत मल भार॥५६॥ अस कहि चला
रचिसि मग माया॥ सर मंदिर बर बाग बनाया॥ मारुतसुत देखा सुभ आश्रम॥ मुनिहि बूझि
जल पियौं जाइ श्रम॥ राक्षस कपट बेष तहँ सोहा॥ मायापति दूतहि चह मोहा॥ जाइ पव २६
नसुत नायउ माथा॥ लाग सो कहै राम गुन गाथा॥ होत महा रन रावन रामहि॥ जितिहहिं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राम न संसय या महि॥ इहाँ भए मैं देखौं भाई॥ ज्ञान दृष्टि बल मोहि अधिकाई॥ मागा जल ते
हि दीन्ह कमंडल॥ कह कपि नहि अघाउँ थोरे जल॥ सर मज्जन करि आतुर आवहु॥ दीक्षा
दे उँ ज्ञान जेहि पावहु॥ दोहा॥ः सर पैठत कपि पद गहा मकरी तब अकुलान॥ मारी सो ध
रि दिव्य तन चली गगन चढि जान॥ ५७॥ कपि तव दरस भइउँ निःपापा॥ मिटा तात मुनि
वर कर सापा॥ मुनि न होइ यह निसिचर घोरा॥ मानहु सत्य वचन कपि मोरा॥ अस कहि गई
अपछरा जवहीं॥ निसिचर निकट गए उ कपि तवहीं॥ कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू॥ पा
छे हमहि मंत्र तुम्ह देहू॥ सिर लंगूर लपेटि पछारा॥ निज तन प्रगटेसि मरती वारा॥ राम रा
म कहि छाडेसि प्राना॥ सुनि मन हरषि चले उ हनुमाना॥ देखा सैल न औषध चीन्हा॥ सह
सा कपि उपारि गिरि लीन्हा॥ गहि गिरि निसि नभ धावत भए उ॥ अवधपुरी उपर कपि ग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ५७

२७ दोहा॥ देषाभरतविसालअतिनिसिचरमनअनुमानि॥ विनुफरसायकमारेउचा
पश्रवनलगितानि॥ ५८॥ परेउमुरछिमहिलागतसायक॥ सुमिरतरामरामरघुनायक
सुनिप्रियवचनभरततवधाए॥ कपिसमीपअतिआतुरआए॥ विकलविलोकिकीसउरला
वा॥ जागतनहिंवहुभांतिजगावा॥ मुषमलीनमनभएदुषारी॥ कहतवचनभरिलोचनवा
री॥ जेहिंविधिरामविमुषमोहिकीन्हा॥ तेहिंपुनियहदारुनदुषदीन्हा॥ जौंमोरेंमनवच
अरुकाया॥ प्रीतिरामपदकमलअमाया॥ तौकपिहोउविगतश्रमसूला॥ जौंमोपररघुपति मो
अनुकूला॥ सुनतवचनउठिवैठकपीसा॥ कहिजयजयतिकोसलाधीसा॥ सोरठा॥ लीन्ह
कपिहिउरलाइपुलकिततनुलोचनसजल॥ प्रीतिनहृदयसमाइसुमिरिरामरघुकुल ५७
तिलक॥ ५९॥ तातकुसलकहुसुषनिधानकी॥ सहितअनुजअरुमातुजानकी॥ सहित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अनुज अरु मातु जानकी॥ कपि सब चरित समास बखाने॥ भए दुखी मन महु पछिताने॥ अ
हह दैव मैं कत जग जायेउँ॥ प्रभु के एकौ काज न आयेउँ॥ जानि कुअवसरु मन धरि धीरा॥
पुनि कपि सन बोले बलबीरा॥ तात गहरु होइहि तोहि जाता॥ काजु नसाइहि होत प्रभा
ता॥ चढु मम सायक सैल समेता॥ पठवौं तोहि जहँ कृपानिकेता॥ सुनि कपि मन उपजा
अभिमाना॥ मोरे भार चलिहि किमि बाना॥ राम प्रभाउ बिचारि बहोरी॥ बंदि चरन कह
कपि कर जोरी॥ दोहा॥ तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहौं नाथ तुरंत॥ अस कहि आयसु पाइ
पद बंदि चले उ हनुमंत॥ भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार॥ मन महु जात स
राहत पुनि पुनि पवनकुमार॥ ६०॥ उहाँ राम लछिमनहि निहारी॥ बोले बचन मनुज अ
नुसारी॥ अर्ध राति गइ कपि नहिं आयेउ॥ राम उठाइ अनुज उर लायेउ॥ सकहु न दु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० षित देषि मोहि काउ॥ बंधु सदा तव म्रदुल सुभाउ॥ मम हित लागि तजेहु पितु माता॥ सहे
५८ हु बिपिन हिम आतप बाता॥ सो अनुराग कहां अब भाई॥ उठहु न सुनि मम बच बिकला
ई॥ जौं जनतेउं बन बंधु बिछोहू॥ पिता बचन मनतेउं नहि ओहू॥ सुत बित नारि भवन परि
वारा॥ होहिं जांहि जग बारहि बारा॥ अस बिचारि जिय जागहु ताता॥ मिले न जगत सहोद
र भ्राता॥ जथा पंष बिनु षग अति दीना॥ मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥ अस मम जि
वन बंधु बिनु तोही॥ जौं जड दैव जिआवै मोही॥ जैहौं अवध कवन मुह लाई॥ नारि हेतु प्रिय
भाइ गंवाई॥ बरु अपजस सहतेउं जग माही॥ नारि हानि बिसेष छति नाही॥ अब अपलो
क सोक सुत तोरा॥ सहिहि निठुर कठोर उर मोरा॥ निज जननी के एक कुमारा॥ तात तासु ५८
तुम्ह प्रान अधारा॥ सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी॥ सब बिधि सुषद परम हित जानी॥ ७

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नरकाहदेहौंनेहिजाई॥ उठिकिनमोहिसियावहुभाई॥ बहुविधिसोचतसोचविमोचन॥ श्र
वतसलिलराजिवदललोचन॥ उमाएकअषंडरघुराई॥ नरगतिभगतकृपालदेषाई॥ सो
रठा॥ ६१॥ प्रभुप्रलापसुनिकानविकलभएवानरनिकर॥ आइगएउहनुमानजिमिकरुना
महँवीररस॥ १॥ हरषिरामभेटेउहनुमाना॥ अतिकृतग्यप्रभुपरमसुजाना॥ तुरतवैदतव
कीन्हिउपाई॥ उठिवैठेलछिमनहरषाई॥ हृदयलाइभेट्योप्रभुभ्राता॥ हरषेसकलभा
लुकपिव्राता॥ कपिपुनिवैदतहाँपहुचावा॥ जेहिविधितवहिताहिलेइआवा॥ यहवृतांत
दसाननसुनेउ॥ अतिविषादपुनिपुनिसिरधुनेउ॥ व्याकुलकुंभकरनपहिआवा॥ वि
विधिजतनकरिताहिजगावा॥ जागानिसिचरदेषियकेसा॥ मानहुकालदेहधरिवैसा॥
कुंभकरनवूझाकहुभाई॥ काहेतवमुषरहेसुषाई॥ कथाकहीसवतेहिअभिमानी॥ जे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ५८ हिप्रकारसीताहरिआनी॥ तातकपिन्हसबनिसिचरमारे॥ महामहाजोधासंघारे॥ दुर्मु
खसुररिपुमनुजअहारी॥ भटअतिकायअकंपनभारी॥ अपरमहोदरआदिकबीरा॥ प
रेसमरमहिसबरनधीरा॥ दोहा॥ सुनिदसकंधरबचनतबकुंभकरनबिलखान॥ जगदं
बाहरिआनिअबसठचाहतकल्यान॥ ६२॥ भलनकीन्हतैंनिसिचरनाहा॥ अबमोहि
आइजगाएहिकाहा॥ अजहूंतातत्यागिअभिमाना॥ भजहुरामहोइहिकल्याना॥ है
दससीसमनुजरघुनायक॥ जाकेहनूमानसेपायक॥ अहहबंधुतैंकीन्हिखोटाई॥ प्रथम
हिंमोहिनसुनाएहिआई॥ कीन्हेहुप्रभुबिरोधतेहिदेवक॥ सिवबिरंचिसुरजाकेसेवक॥ ना
रदमुनिमोहिग्यानजोकहा॥ कहतेउंतोहिसमयनिरबहा॥ अबभरिअंकभेटुमोहिभाई॥ ५८
लोचनसुफलकरौंमैंजाई॥ स्यामगातसरसीरुहलोचन॥ देखौंजाइतापत्रयमोचन॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥दोहा॥ः रामरूपगुनसुमिरतमगनभएउछनएक॥रावनमागेउकोटिघटमदअरु
महिषअनेक॥६३॥महिषखाइकरिमदिरापाना॥गर्जोवज्राघातसमाना॥कुंभकरनदुर्म
दरनरंगा॥चलादुर्गतजिसेननसंगा॥देषिविभीषनआगेआएउ॥परेउचरननिज
नामसुनाएउ॥अनुजउठाइहृदयतेहिलायो॥रघुपतिभक्तजानिमनभायो॥तातला
तरावनमोहिमारा॥कहतपरमहितमंत्रविचारा॥तेहिंगलानिरघुपतिपहिंआएउ॥दे
षिदीनप्रभुकेमनभाएउ॥सुनुसुतभएउकालवसरावन॥सोकिमानअवपरमसिषा
वन॥धन्यधन्यतैधन्यविभीषन॥भएहुतातनिसिचरकुलभूषन॥वंधुवंसतैकीन्हउ
जागर॥भजेहुरामसोभासुषसागर॥दोहा॥ः वचनकर्ममनकपटतजिभजेहुरामरन
धीर॥जाहुननिजपरसूझमोहिभएउकालवसवीर॥६४॥वंधुवचनसुनिचलाविभीष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
३०

न॥ आरउँजहँत्रैलोकबिभूषन॥ नाथभूधराकारसरीरा॥ कुंभकरनआवतरनधीरा॥ र
तनाकपिन्हसुनाजबकाना॥ किलिकिलाइधाएबलवाना॥ लिएउठाइबिटपअरुभू
धर॥ कटकटाइडारहिंताऊपर॥ कोटिकोटिगिरिसिषरप्रहारा॥ करहिंभालुकपिएक
एकवारा॥ मुर्‍योनमनतनुटर्‍योनटार्‍यो॥ जिमिगजअर्कफलनिकोमार्‍यो॥ तबमारुत
सुतमुठिकाहन्यो॥ पर्‍योधरनिव्याकुलसिरधुन्यो॥ पुनिउठितेहिंमारेउहनुमंता॥ घू
मितभूतलपरेउतुरंता॥ पुनिनलनीलहिंअवनिपछारेसि॥ जहँतहँपटकिपटकिभट
डारेसि॥ चलीबलीमुखसेनपराई॥ अतिभयत्रसितनकोउसमुहाई॥ दोहा॥ः अंगदादि
कपिमुर्छितकरिसमेतसुग्रीव॥ कांखदाबिकपिराजकहँचलाअमितबलसींव॥ ६५॥ उ
माकरतरघुपतिनरलीला॥ खेलगरुडजिमिअहिगनमीला॥ भृकुटिभंगकालहिजोषा ३०

ई॥ नाहि कि सो है ऐसि लराई॥ जगपावनि कीरति बिस्तरिहहि॥ गाइ गाइ भवनिधि नर त
रिहहि॥ मुरुछा गै मारुतसुत जागा॥ सुग्रीवहि तब खोजन लागा॥ सुग्रीवहु कै मुरुछा बी
ती॥ निबुकि गए उ तेहि मृतक प्रतीती॥ काटेसि दसन नासिका काना॥ गर्जि अकास चले
उ तेहि जाना॥ गहेउ चरन गहि भूमि पछारा॥ अति लाघव उठि पुनि तेहि मारा॥ पुनि आ
ए उ प्रभु पहि बलवाना॥ जयति जयति जय कृपानिधाना॥ नाक कान काटे जिय जानी॥ फि
रा क्रोध करि भै मन ग्लानी॥ सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा॥ देखत कपि दल उपजी त्रासा॥
दोहा॥ ॥ जय जय जय रघुबंस मनि धाए कपि दै हूह॥ एकहि बार तासु पर छाडेन्हि गिरि त
रु जूह॥ ६६॥ कुंभकरन रन रंग बिरुद्धा॥ सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा॥ कोटि कोटि कपि ध
रि धरि खाई॥ जनु टीडी गिरि गुहा समाई॥ कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा॥ कोटिन्ह मीजि मि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
३१

लवमहिगर्दा॥ मुखनासाश्रवनन्हिकीबाटा॥ निसरिपराहिभालुकपिठाटा॥ रनमदमत्तनि
साचरदर्पा॥ विस्वग्रसिहिजनुएहिविधिअर्पा॥ मुरेसुभटसवफिरहिनफेरे॥ सूझनननयनसु
नहिनहिटेरे॥ कुंभकरनकपिफौजविडारी॥ सुनिधाईरजनीचरधारी॥ देखीरामविकलक
टकाई॥ रिपुअनीकनानाविधिआई॥ दोहा॥: सुनुसुग्रीवविभीषनअनुजसंभारेहुसेन॥
मैंदेखौंखलबलदलहिबोलेराजिवनयन॥६७॥ करसारंगसाजिकटिभाथा॥ अरिदलदल
नचलेरघुनाथा॥ प्रथमकीन्हिप्रभुधनुषटकोरा॥ रिपुदलबधिरभएउसुनिसोरा॥ सत्य
संधछाडेसरलछा॥ कालसर्पजनुचलेसपछा॥ जहंतहंचलेविपुलनाराचा॥ लगेकटन
भटविकटपिसाचा॥ कटहिचरनउरसिरभुजदंडा॥ बहुतकवीरहोहिसतषंडा॥ घुर्मिघुर्मि
घायलमहिपरहीं॥ उठिसंभारिसुभटपुनिलरहीं॥ लागतबानजलदजिमिगाजहि॥ व ३१

कुतकदेषिकठिनसरभाजहिं ॥ रुंडप्रचंडमुंडविनुधावहिं ॥ धरुधरुमारुमारुधुनिगावहिं

॥दोहा॥ छनमहुंप्रभुकेसायकन्हिकाटेविकटपिसाच ॥ पुनिरघुवीरनिषंगमहुंप्रविसे

सवनाराच ॥६८॥ कुंभकरनमनदीषविचारी ॥ हतिछनमांझनिसाचरधारी ॥ भाअतिक्रुद्धमहा

वलवीरा ॥ कियोमृगनायकनादगंभीरा ॥ कोपिमहीधरलेइउपारी ॥ डारैजहंमर्कटभ

टभारी ॥ आवतदेषिसैलप्रभुभारे ॥ सरन्हिकाटिरजसमकरिडारे ॥ पुनिधनुतानिकोपिर

क घुनायक ॥ छाडेअतिकरालवहुसायक ॥ तनुमहुंप्रविसिनिसरिसरजाहीं ॥ जिमिदामिनि

घनमांझसमाहीं ॥ सोनितस्रवतसोहतनकारे ॥ जनुकज्जलगिरिगेरुपनारे ॥ विकलविलो

किभालुकपिधाए ॥ विहसाजवहिंनिकटकपिआए ॥दोहा॥ महानादकरिगर्ज्जाकोटि

कोटिगहिकीस ॥ महिपटकैगजराजइवसपथकरैदससीस ॥६९॥ भागेभालुवलीमुषजू

लं० ३२

था॥एकबिलोकिजिमिमेषबरूथा॥चलेभागिकपिभालुभवानी॥बिकलपुकारतआरतबा
नी॥यहनिसिचरदुकालसमअहई॥कपिकुलदेसपरनअबचहई॥कृपाबारिधररा
मषरारी॥पाहिपाहिप्रनतारतिहारी॥सकरुनबचनसुनतभगवाना॥चलेसुधारिस
रासनबाना॥रामसेननिजपाछेंघाली॥चलेसकोपमहाबलसाली॥खैंचिधनुषसरसतसं ६२
धाने॥छूटेतीरसरीरसमाने॥लागतसरधावारिसभरा॥कुधरडगमगतडोलतिधरा॥
लीन्हएकतेहिंसैलउपाटी॥रघुकुलतिलकभुजासोइकाटी॥धावाबामबाहुगिरिधा
री॥प्रभुसोउभुजाकाटिमहिपारी॥काटभुजासोहखलकैसा॥उग्रबिलोकनिप्रभुहि पछहीनमंदर गिरिजेसा३
बिलोका॥ग्रसनचहतमानहुँत्रैलोका॥दोहा॥:करिचिक्कारअतिधावाबदनपसारि ३२
गगनसिद्धसुरत्रासितहाहाहेतिपुकारि॥७०॥सभयदेवकरुनानिधिजान्यो॥श्रव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नप्रजंतमरामननात्यो॥ विरथकियनिकरनिसिचरमुषभरेउ॥ तदपिमहाबलभूमिनपरे
उ॥ सरन्हिभरामुषसन्मुषधावा॥ कालत्रोनसजीवजनुआवा॥ तवप्रभुकोपितीव्रसर
लीन्हा॥ धरतेभिन्नतासुसिरकीन्हा॥ सोसिरपरेउदसाननआगे॥ विकलभएउजि
मिफनिमनित्यागे॥ धरनिधसैधरधावप्रचंडा॥ तवप्रभुकाटिकीन्हदुइषंडा॥ परेभूमि
जिमिनभतेभूधर॥ हेठदाविकपिभालुनिसाचर॥ तासुतेजप्रभुवदनसमाना॥ सुरमु
निसवहिंअचंभौमाना॥ सुरदुंदुभीवजावहिंहरषहिं॥ अस्तुतिकरहिंसुमनवहुवरष
हिं॥ करिविनतीसुरसकलसिधारे॥ तेहीसमयदेवरिषिआए॥ गगनोपरिहरिगुन
गनगाए॥ रुचिरवीररसप्रभुमनभाए॥ वेगिहतहुषलकहिमुनिगए॥ रामसमररम
हिसोभतभए॥ छंद॥ संग्रामभूमिविराजरघुपतिअतुलवलकोसलधनी॥ श्रमविंदु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ३३

मुषराजीवलोचनश्रवतसोनितकनी॥ भुजजुगलपेलतसरसरासनभालुकपिचहु
दिसिवने॥ कहदासतुलसीकहिनसकछविसेषजेहिआननघने॥ दोहा॥: निसिच
रअधममलाकरताहिदीन्हनिजधाम॥ गिरिजातेनरमंदमतिजेनभजहिंश्रीराम॥
७१॥ दिनकेअंतफिरीं द्वौअनी॥ समरभईसुभटन्हश्रमघनी॥ रामकृपाकपिदलव
लवाढा॥ जिमितृनपाइलागअतिडाढा॥ छीजहिनिसिचरदिनअरुराती॥ निजमुष
कहेसुकृतजेहिभाँती॥ वहुविलापदसकंधरकरई॥ वंधुसीसपुनिपुनिउरधरई॥ रोवहिं
नारिहृदयहतिपानी॥ तासुतेजवलविपुलवषानी॥ मेघनादतेहिअवसरआएउ॥ क
हिवहुकथापितासमुझाएउ॥ देषहुकालिमोरमनुसाई॥ अवहिवहुतकाकरौंवडाई॥
इष्टदेवसोंवलरथपाएउ॥ सोवलतातनतोहिदेषाएउ॥ एहिविधिजल्पतभएउवि ३३

हाना॥ चहुँदुआरलागेकपिनाना॥ इतकपिभालुकालसमवीरा॥ उतरजनीचरअतिर
नधीरा॥ लरहिंसुभटनिजनिजजयहेतू॥ वरनिनजाइसमरखगकेतू॥ दोहा॥ मेघना
दमायामयरथचढिगयउअकास॥ गर्जेउअट्टहासकरिभइकपिकटकहित्रास॥
७२॥ सक्तिसूलतरवारिकृपाना॥ अस्त्रसस्त्रकुलिसायुधनाना॥ डारैपरसुपरिघपा
षाना॥ लागेउवृष्टिकरैवहुवाना॥ दसदिसिरहेवाननभछाई॥ मानहुमघामेघझरिला
ई॥ धरुधरुमारुसुनियधुनिकाना॥ जोमारैतेहिकोउनजाना॥ गहिगिरितरुअकास
कपिधावहिं॥ देखहिंतेहिनदुखितफिरिआवहिं॥ अवघटघाटवाटगिरिकंदर॥ मा
यावलकीन्हेसिसरपंजर॥ जाहिंकहांव्याकुलभएवंदर॥ सुरपतिवंदिपरेजनुमंदर॥
मारुतसुतअंगदनलनीला॥ कीन्हेसिविकलसकलवलसीला॥ पुनिलछिमनसुग्रीं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ३४ वविभीषन॥ सरन्हिमारिकीन्हेसिजर्जरतन॥ पुनिरघुपतिसैंजूझैलागा॥ सरछाँड़ैहोइ
लागहिंनागा॥ ब्यालपासबसभएखरारी॥ स्वबसअनंतएकअविकारी॥ नटइवकप
टचरितकरनाना॥ सदास्वतंत्रएकभगवाना॥ रनसोभालगिप्रभुहिंबँधायो॥ नागपा
सदेवन्हभयपायो॥ दोहा॥ गिरिजाजासुनामजपिमुनिकाटहिंभवपास॥ सोकिबंध
तरआवैव्यापकविस्वनिवास॥ ७३॥ चरितरामकेसगुनभवानी॥ तर्किनजाहिंबुद्धिब
लबानी॥ असविचारिजेतज्ञविरागी॥ रामहिंभजहिंतर्कसबत्यागी॥ व्याकुलकटककी
न्हघननादा॥ पुनिभाप्रगटकहैदुर्बादा॥ जामवंतकहखलरहुठाढ़ा॥ सुनिकरिताहि
क्रोधअतिबाढ़ा॥ बूढ़जानिसठछाँड़ेउँतोही॥ लागेसिअधमपचारैमोही॥ असकहित ३४
रलत्रिसूलचलायो॥ जामवंतकरगहिसोइधायो॥ मारेसिमेघनादकेछाती॥ पराभूमि

घुर्मितसुरघाती॥पुनिरिसानगहिचरनफिरायो॥महिपछारिनिजबलदेषरायो॥बरप्रसा
दसोमरैनमारा॥तबगहिपदलंकापरडारा॥इहाँदेवरिषिगरुडपठायो॥रामसमीपसप
दिसोआयो॥दोहा॥षगपतिसबधरिषाएमायानागबरूथ॥मायाबिगतभएसबहर
षेबानरजूथ॥गहिगिरिपादपउपलनषधाएकीसरिसाय॥चलेतमीचरबिकलतरगढ
परचढेपराइ॥७४॥मेघनादकेमुरछाजागी॥पितहिबिलोकिलाजअतिलागी॥तुरत
गएउगिरिबरकंदरा॥करौंअजयमषअसमनधरा॥इहाँबिभीषनमंत्रबिचारा॥सु
नहुनाथबलअतुलउदारा॥मेघनादमषकरैअपावन॥षलमायावीदेवसतावन॥जौं
प्रभुसिद्धहोइसोपाइहि॥नाथबेगिपुनिजीतिनजाइहि॥सुनिरघुपतिअतिसयसुषमाना॥
बोलेअंगदादिकपिनाना॥लछिमनसंगजाहुसबभाई॥करहुबिधंसजज्ञकरजाई॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
३५

तुम्ह लछिमन मारे हु रन ओही ॥ देषि सभय सुर दुष अति होही ॥ मोर हृते हि कल बुद्धि उ
पाई ॥ जेहि छीजै निसिचर सुनु भाई ॥ जामवंत सुग्रीव बिभीषन ॥ सेन समेत रहहु तीनि
उ जन ॥ जब रघुबीर दीन्हि अनुसासन ॥ कटि निषंग कसि साजि सरासन ॥ प्रभु प्रताप उर
धरि रनधीरा ॥ बोले घन इव गिरा गंभीरा ॥ जौं तेहि आजु बधे बिनु आवौं ॥ तौ रघुपति सेव
क न कहावौं ॥ जौं सत संकर करहि सहाई ॥ तदपि हतौं रघुबीर दोहाई ॥ दोहा ॥ रघुप
ति चरननि नाइ सिर चले उ तुरंत अनंत ॥ अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥ ७५ ॥
जाइ कपिन्ह सो देषा बैसा ॥ आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥ कीन्ह कपिन सब जज्ञ बिधंसा ॥
जब न उठै तब करहि प्रसंसा ॥ तदपि न उठै धरेन्हि कच जाई ॥ लातन्हि हति हति चले परा
ई ॥ लै त्रिसूल धावा कपि भागे ॥ आए जहँ रामानुज आगे ॥ आवा परम क्रोध कर मारा ॥ ग

३५

जेघोररववारहिवारा॥ कोपिमरुतसुतअंगदधाए॥ हतित्रिसूलउरधरनिगिराए॥ प्रभु
कहछाडेसिसूलप्रचंडा॥ सरहतिकृतअनंतजुगखंडा॥ उठिवहोरिमारुतिजुवराजा॥ ह
तहिकोपितेहिघावनवाजा॥ फिरेवीररिपुमरैनमारा॥ तवधावाकरिघोरचिकारा॥ लछि
मनमनअसमंत्रदृढावा॥ एहिपापिहिमैवहुतषेलावा॥ आवतदेषिक्रुद्धजनुकाला
लछिमनछाडेविसिषकराला॥ देषेसिआवतपविसमवाना॥ तुरतभएउषलअंतरधा
ना॥ विविधवेषधरिकरैलराई॥ कवहुकप्रगटकवहुदुरिजाई॥ देषिअजयरिपुडरपेकी
सा॥ परमक्रुद्धतवभएउअहीसा॥ सुमिरिकोसलाधीसप्रतापा॥ सरसंधानकीन्हकरिदा
पा॥ छाडावानमांझउरलागा॥ मरतीवारकपटसवत्यागा॥ दोहा॥ रामानुजकहंरामक
हंअसकहिछाडेसिप्रान॥ धन्यधन्यतवजननीकहअंगदहनुमान॥ ७६॥ विनुप्रया

लं०
३६

सहनुमानउठायो॥ लंकाद्वाररषिपुनिआयो॥ नासुमरनसुनिसुरगंधर्बो॥ चढिविमान
आएनभसर्बो॥ बरषिसुमनदुंदुभीवजावहिं॥ श्रीरघुनाथविमलजसुगावहिं॥ जयअनं
तजयजगदाधारा॥ तुम्हप्रभुसबदेवन्हिनिस्तारा॥ अस्तुतिकरिसुरसिद्धसिधाए॥ लछि
मनकृपासिंधुपहिआए॥ सुतबधसुनादसाननजबहीं॥ मुरछितभएउपरेउमहितबहीं॥
मंदोदरीरुदनकरभारी॥ उरताडनबहुभांतिपुकारी॥ नगरलोगसबव्याकुलसोचा॥ सक
लकहहिंदसकंधरपोचा॥ दोहा ॥ नवदसकंठविविधिविधिसमझाईसबनारि॥ नस्वररू
पजगतसबदेषहुहृदयविचारि॥ ७७॥ तिन्हहिज्ञानउपदेसारावन॥ आपुनमंदकथासु
भपावन॥ परउपदेसकुसलबहुतेरे॥ जेआचरहिंतेनरनघनेरे॥ निसासिरानिभएउभिनु ३६
सारा॥ लगेभालुकपिचारिहुद्वारा॥ सुभटबोलाइदसाननबोला॥ रनसनमुषजाकरमनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

डोला॥ सोअवहीवरजा उपराई॥ संजुगविमुषभएनभलाई॥ निजभुजवलमैवैरुवढावा
देहौंउतरुजोरिपुचढिआवा॥ असकहिमरुतवेगरथसाजा॥ वाजेसकलजुझाउवाजा॥
चलेवीरसवअतुलितवली॥ जनुकज्जलकेआँधीचली॥ असगुनअमितहोहितेहिका
ला॥ गनेनभुजवलगर्वविसाला॥ छंद॥: अतिगर्वगनैनसगुनअसगुनश्रवहिंआयुध
हाथतें॥ भटगिरतरथतेंवाजिगजचिक्करतभाजहिंसाथतें॥ गोमायुगीधकरालषररवस्वा
नवोलहिंअतिघने॥ जनुकालदूत उलूकवोलहिंवचनपरमभयावने॥ दोहा॥: ताहिकि
संपतिसगुनसुभसपनेहुमनविश्राम॥ भूतद्रोहरतमोहवसरामविमुषरतिकाम॥ ७८॥:
चलेअनिसाचरकटकअपारा॥ चतुरंगिनीअनीवहुधारा॥ विविधिभाँतिवाहनरथजाना॥
विपुलवरनपताकध्वजनाना॥ चलेमत्तगजजूथघनेरे॥ प्राविटजलदमरुतजनुप्रेरे॥ क्त

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ९७ नवरत्नविरचेतननिकाया॥ समरसूरजानहिंबहुमाया॥ अतिविचित्रवाहिनीविराजी॥ वीर
वसंतसेनजनुसाजी॥ चलतकटकदिगसिंधुरडगहीं॥ छुभितपयोधिकुधरडगमगहीं॥ उ
ठीरेनुरविगयउछपाई॥ मरुतथकितवसुधाअकुलाई॥ पनवनिसानघोररववाजहिं॥ प्र
लयसमयकेघनजनुगाजहिं॥ भेरिनफीरिवाजसहनाई॥ मारूरागसुभटसुषदाई॥ केह
रिनादवीरसवकरहीं॥ निजनिजबलपौरुषउच्चरहीं॥ कहैदसाननसुनहुसुभट्टा॥ मरद
हुभालुकपिन्हकेठट्टा॥ हौंमारिहौंभूपद्वौभाई॥ असकहिसन्मुषफौजरेंगाई॥ यहसु
धिसकलकपिन्हजवपाई॥ धाएकरिरघुवीरदोहाई॥ छंद॥ धाएविसालकरालमर्क
टभालुकालसमानते॥ मानहुसपछउडाहिंभूधरवृंदनानावानते॥ नषदसनसैलम ९७
हाद्रुमायुधसवलसंकनमानहीं॥ जयरामरावनमत्तगजमृगराजसुजसवषानहीं॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥दोहा॥ ॥ दुहूँ दिसि जय जय कार करि निज निज जोरी जानि॥ भिरे वीर इत रामहि उत रा
वनहि बषानि॥ ७४ ॥ रावन रथी बिरथ रघुवीरा॥ देषि विभीषन भए अधीरा॥ अधिक प्रीति
मन भा संदेहा॥ वंदि चरन कह सहित सनेहा॥ नाथ न रथ नहि तनु पदत्राना॥ केहि विधि जि
तव वीर वलवाना॥ सुनहु सषा कह कृपानिधाना॥ जेहि जय होइ सो स्यंदन आना॥ सौरज धी
रज तेहि रथ चाका॥ सत्य सील दृढ ध्वजा पताका॥ वल विवेक दम परहित घोरे॥ छमा कृपा
समता रजु जोरे॥ ईस भजन सारथी सुजाना॥ विरति चर्म संतोष कृपाना॥ दान परसु वुधि सक्ति
प्रचंडा॥ वर विज्ञान कठिन कोदंडा॥ अमल अचल मन त्रोन समाना॥ सम जम नियम सिली
मुष नाना॥ कवच अभेद विप्र गुर पूजा॥ एहि सम विजय उपाइ न दूजा॥ सषा धर्ममय अस
रथ जाके॥ जीतन कह न कतहु रिपु ताके॥ दोहा॥ महा अजय संसार रिपु जीति सकै सो वीर॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
३५

जाके अस सरथ होइ दृढ सुनहु सषा मतिधीर॥ सुनि प्रभु बचन बिभीषन हरषि गहे पद कंज
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुषपुंज॥ उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान॥
लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन॥ ८०॥ सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना॥ दे
षत रन नभ चढे बिमाना॥ हमहू उमा रहे तेहि संगा॥ देषत राम चरित रनरंगा॥ सुभट सम
र रस दुहु दिसि माते॥ कपि जयसील राम बल ताते॥ एक एक सन भिरहि पचारहि॥ एकन्ह
एक मर्दि महि पारहि॥ मारहि काटहि धरहि पछारहि॥ सीस तोरि सीसन्ह सन मारहि॥ उ
दर बिदारहि भुजा उपारहि॥ गहि पद अवनि पटकि भट डारहि॥ निसिचर भट महि गा
डहि भालू॥ ऊपर डारि देहि बहु बालू॥ बीर बलीमुष जुद्ध बिरुद्धे॥ देषियत बिपुल काल ज
नु क्रुद्धे॥ छंद॥ क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन श्रवत सोनित राजहीं॥ मर्दहि निसाचर क ३५

टकभटबलवंतघनजिमिगाजहीं॥ मारहिंचपेटन्हिडाटिदाँतनकाटिलातनमीजहीं॥
चिक्करहिंमर्कटभालुछलबलकरहिंजेहिंखलछीजहीं॥ धरिगालफारहिंउरबिदारहिं
गलअंतावरिमेलहीं॥ प्रहलादपतिजनुबिबिधतनुधरिसमरअंगनखेलहीं॥ धरुमारुकाटु
पछारुघोरगिरागगनमहिभरिरही॥ जयरामजोतृनतेकुलिसकरकुलिसतेकरतृनसही॥
दोहा॥ः निजदलबिचलतदेखेसिबीसभुजादसचाप॥ रथचढिचलेउदसाननफिरहु
फिरहुकरिदाप॥ धायउपरमक्रुद्धदसकंधर॥ सन्मुखचलेहूहदैबंदर॥ गहिकरपा
दपउपलपहारा॥ डारेन्हितापरएकहिंबारा॥ लागहिंसैलबज्रतनतासू॥ खंडखंडहोइ
फूटहिंआसू॥ चलानअचलरहारथरोपी॥ रनदुर्मदरावनअतिकोपी॥ इतउतझपटिद
पटिकपिजोधा॥ मर्दैलागभयउअतिक्रोधा॥ चलेपराइभालुकपिनाना॥ त्राहित्राहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ३९ अंगदहनूमाना॥ पाहिपाहिरघुवीरगोसांईं॥ यहखलखाइकालकीनाईं॥ तेहिदेखेकपि
सकलपराने॥ दसहुंचापसायकसंधाने॥ छंद॥ संधानिधनुसरनिकरछाडेसिउरगजि
मिउडिलागहीं॥ रहेपूरिसरधरनीगगनदिसिविदिसिकहंकपिभागहीं॥ भयोअतिको
लाहलविकलकपिदलभालुबोलहिंआतुरे॥ रघुवीरकरुनासिंधुआरवंधुजनरछकह त
रे॥ दोहा॥ निजदलविकलदेखिकपिकसिनिषंगधनुहाथ॥ लछिमनचलेक्रुद्धहो
इनाइरामपदमाथ॥ ८४॥ रेखलकामारसिकपिभालू॥ मोहिविलोकुतोरमैंकालू॥ खोज
तरहेउंतोहिसुतघाती॥ आजुनिपातिजुडावौंछाती॥ असकहिछाडेसिवानप्रचंडा॥ ल
छिमनकिएसकलसतखंडा॥ कोटिन्हआयुधरावनडारे॥ तिलप्रवानकरिकाटिनिवा ३९
रे॥ पुनिनिजवानन्हकीन्हप्रहारा॥ स्यंदनभंजिसारथीमारा॥ सतसतसरमारेदसभाला॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गिरिश्रृंगन्ह जनु प्रविसहिं व्याला॥ पुनि सत सर मारा उर माहीं॥ परेउ धरनि तल सुधि क
छु नाहीं॥ उठा प्रबल पुनि मुरछा जागी॥ छाडेसि ब्रह्म दीन्हि जो सांगी॥ छंद॥ जो ब्रह्मद
त्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही॥ परयो बीर बिकल उठा दसमुख अतुल बल महिमा र
ही॥ ब्रह्मांड भुवन बिराज जाके एक सिर जिमि रज कनी॥ तेहि चह उठावन मूढ रावन जा
त्रि न नहिं भुवन धनी॥ दोहा॥ देखि पवनसुत धाइ बोलत बचन कठोर॥ आवत कपिहि हि
नेउ तेहिं मुष्टि प्रहार प्रघोर॥ ८३॥ जानु टेकि कपि भूमि न गिरा॥ उठा संभारि बहुत रिस भ
रा॥ मुठिका एक ताहि कपि मारा॥ परे सैल जनु बज्र प्रहारा॥ मुरछा गइ बहोरि सो जागा॥
कपि बल बिपुल सराहन लागा॥ धिग धिग मम पौरुष धिग मोही॥ जौं तैं जियत रहेसि सुरद्रो
ही॥ अस कहि लछिमन कहं कपि ल्यायो॥ देखि दसानन बिसमय पायो॥ कह रघुबीर स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ८०

मुर्छि जियभ्राता॥ तुम्हहु तांतभछकसुरत्राता॥ सुनतवचनउठिवैठकपाला॥ गई गगनसो
सक्ति कराला॥ पुनिकोदंडवानगहिधारा॥ रिपुसन्मुषअतिआतुरआरा॥ छंद॥ आतुरव
होरिविभंजिस्यंदनसूतहतिव्याकुलकियो॥ गिरोधरनिदसकंधरविकलतरवानसतवे
ध्योहियो॥ सारथीदूसरघालिरथतेहितुरतलंकालेगयो॥ रघुवीरवंधुप्रतापपुंजवहोरिप्र
भुचरननिहनयो॥ दोहा॥ उहांदसाननजागिकरिकैरैलागाकछुजज्ञ॥ रामविरोधीविज
यचहसठहठवसअतिअज्ञ॥ ८४॥ इहांविभीषनसवसुधिपाई॥ सपदिजाइरघुपतिहिसु
नाई॥ नाथकरैरावनएकजागा॥ सिद्धभएनहिमरिहिअभागा॥ पठवहुनाथवेगिभटवंद
र॥ करहिविधंसआवदसकंधर॥ प्रातहोतप्रभुसुभटपठाए॥ हनुमदादिअंगदसवधाए॥ ८०
कौतुककूदिचढेकपिलंका॥ पैठरावनभवनअसंका॥ जज्ञकरतजवहींसोदेषा॥ सकलक

पिन्ह भा क्रोध बिसेषा॥ रन तें निलज भाजि गृह आवा॥ इहाँ आइ बक ध्यान लगावा॥ अस कह
हि अंगद मारा लाता॥ चितव न सठ स्वारथ मन राता॥ छंद॥ ॥ नहि चितव जब करि कोप क
पि गहि दसन लातन्ह मारहीं॥ धरि केस नारि निकारि बाहेर तेति दीन पुकारहीं॥ तब उठेउ
क्रुद्ध कृतांत सम गहि चरन बानर डारई॥ एहि बीच कपिन्ह बिधंस कृत मष देखि मन महुँ हा
रई॥ दोहा॥ जग्य बिधंसि कुसल कपि आए रघुपति पास॥ चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ त्यागि
जिवन कै आस॥ ८५॥ चलत होहिं अति असुभ भयंकर॥ बैठहिं गीध उडाहिं सिरन्ह पर॥ भए
उ काल बस काहु न माना॥ कहेसि बजावहु जुद्ध निसाना॥ चली तमीचर अनी अपारा॥ बहु
गज रथ पदाति असवारा॥ प्रभु सन्मुख धाए खल कैसे॥ सलभ समूह अनल कहँ जैसे॥ इहाँ
देवतन्ह अस्तुति कीन्ही॥ दारुन बिपति हमहि एहि दीन्ही॥ अब जनि राम खेलावहु एही॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
४१

अतिसयदुषितहोतिवैदेही॥ देवबचनमुनिप्रभुमुसकाना॥ उठिरघुवीरसुधारेवाना॥ ज ९
टाजूटदृढबांधेमाथे॥ सोहहिंसुमनवीचविचगाथे॥ अरुननयनवारिदतनस्यामा॥ अषि
ललोकलोचनाभिरामा॥ कटितटपरिकरकस्योनिषंगा॥ करकोदंडकठिनसारंगा॥ छंद
सारंगकरसुंदरनिषंगसिलीमुषाकरकटिकस्यो॥ भुजदंडपीनमनोहरायतउरधरासुरप
दलस्यो॥ कहदासतुलसीजवहिंप्रभुसरचापकरफेरनलगे॥ ब्रह्मांडदिग्गजकमठअहि
महिसिंधुभूधरडगमगे॥ दोहा॥ सोभादेषिहरषिसुरवरषहिंसुमनअपार॥ जयजय
जयकरुनानिधिछविवलगुनआगार॥ ८६॥ एहीबीचनिसाचरअनी॥ कसमसातआई
अतिघनी॥ देषिचलेसन्मुषकपिभट्टा॥ प्रलयकालकेजनुघनघट्टा॥ वहुकृपानतरवा ४१
रिचमंकहिं॥ जनुदहदिसिदामिनीदमंकहिं॥ गजरथतुरगचिकारकठोरा॥ गर्जहिंमनहु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बलाहककघोरा॥कपिलंगूलबिपुलनभछाए॥मनहुंइंद्रधनुउयेसुहाए॥उठैधूरिमान
हुजलधारा॥बानबुंदभैव्रिष्टिअपारा॥दुहुंदिसिपर्वतकरहिंप्रहारा॥बज्रपातजनुबारहि
बारा॥रघुपतिकोपिबानझरिलाई॥घायलभैनिसिचरसमुदाई॥लागतबानबीरचिक्करहीं
घुर्मिघुर्मिजहंतहंमहिपरहीं॥श्रवहिंसैलजनुनिर्झरभारी॥श्रोनितसरिकादरभयकारी॥
छंद॥:॥कादरभयंकररुधिरसरितावलीपरमअपावनी॥दोउकूलदलरथरेतचक्रअ
वर्तबहतिभयावनी॥जलजंतुगजपदचरतुरगखरबिबिधबाहनकोगने॥सरसक्तितोमर
सर्पचापतरंगचर्मकमठघने॥दोहा॥:बीरपरहिंजनुतीरतरुमज्जाबहुबहफेन॥काद
रदेषिडरहिंतहंसुभटन्हकेमनचेन॥८७॥मज्जहिंभूतपिसाचबेताला॥प्र[illegible]मथमहाझो थ
टिंगकराला॥काककंकलैभुजाउडाहीं॥एकतेछीनिएकलैखाहीं॥एककहहिंऐसि

लं०
४२

उमा सो घाई॥ सठ कहु तुम्हार दरिद्र न जाई॥ कहुं कहुं भट घायल तट गिरे॥ जहं तहं मनहुं अर्द्धज
ल परे॥ खैंचहि गीध आंत तट भये॥ जनु बनसी खेलहि चित दए॥ बहु भट बहहिं चढे षग जा
हीं॥ जनु नावरि खेलहि सरि माहीं॥ जोगिनि भरि भरि षप्पर संचहि॥ भूत पिसाच वधू नभ नं
चहि॥ भट कपाल करताल बजावहि॥ चामुंडा नाना विधि गावहि॥ जंबुक निकर कटक्कट कट्ट
हिं॥ खांहि हुआंहि अघाइ दपट्टहि॥ कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोल्लहि॥ सीस परे महि जे
य जय बोल्लहि॥ छंद॥ बोल्लहि जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर विनु धावहीं॥ षप्परिन्ह
षग्ग अलुझि जुझि हि सुभट भटन्ह ढहावहीं॥ वानर निसाचर निकर मर्दहि राम बल दर्पित
भए॥ संग्राम अंगन सुभट सोवहि राम सर निकरन्हि हए॥ दोहा॥ रावन हृदय विचारा
भा निसिचर संघार॥ मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार॥ ८८॥ देवन्ह प्रभुहि पयादा ४२

देदेषा॥ उपजा अस्त्रतिछोभविसेषा॥ सुरपतिनिजरथतुरतपठावा॥ हरषसहितमातलि
लैआवा॥ तेजपुंजरथदिव्यअनूपा॥ हरषिचढेकोसलपुरभूपा॥ चंचलतुरगमनोहरचारी
अजरअमरमनसमगतिकारी॥ रथारूढरघुनाथहिदेषी॥ धारकपिबलपाइविसेषी॥ सही
नजाइकपिन्हकैमारी॥ तबरावनमायाविस्तारी॥ सोमायारघुबीरहिबांची॥ लछिमनकपि
न्हसोमानीसांची॥ देषीकपिन्हनिसाचरअनी॥ अनुजसहितबहुकोसलधनी॥ छंद ॥:
बहुरामलछिमनदेषिमर्कटभालुमनअतिअपडरे॥ जनुचित्रलिषितसमेतलछिमनज
हसोतहंचितवहिषरे॥ निजसेनचकितविलोकिहसिसरचापसजिकोसलधनी॥ मायाह
रीहरषिनिमिषमहुंहरषीसकलमर्कटअनी॥ दोहा ॥: बहुरिरामसबतनचितैबोलेबचन
गंभीर॥ द्वंदजुद्धदेषहुसकलश्रमितभएअतिवीर॥ ८८॥ असकहिरथरघुनाथचढ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रां०
४३ लावा॥ विप्र चरन पंकज सिर नावा॥ नकलंक मे सक्रोध अछावा॥ गर्जत तर्जत सन्मुष धावा॥
जीते हु जे भट संजुग माही॥ सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाही॥ रावन नाम जगत जस जाना॥ लोक
पजा कवंदीषाना॥ षर दूषन विराध तुम्ह मारा॥ बधेउ व्याध इव बालि विचारा॥ निसिचर नि
कर सुभट संघारेहु॥ कुंभकरन घननादहि मारेहु॥ आजु वयरु सब लेउ निवाही॥ जौ रन भूप
भाजि नहि जाही॥ आजु करौं षलु काल हवाले॥ परेहु कठिन रावन के पाले॥ सुनि दुर्वचन
कालवस जाना॥ विहसि वचन कह कृपानिधाना॥ सत्य सत्य सब तव प्रभुताई॥ जल्पसि जनि
दिषाउ मनुसाई॥ छंद॥ जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा॥
संसार महं पूरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस समा॥ एक सुमन प्रद एक सुमन फल एक फ
लै केवल लागही॥ एक कहहि कहहि करहि अपर एक करहि कहत न बागही॥ दोहा ४३

रामबचनसुनिबिहसामोहिसिषावतग्यान॥बयरुकरतनहितबडरैअबलागेप्रियप्रान ७१
९०॥ कहिदुर्बचनक्रुद्धदसकंधर॥कुलिससमानलागछाडैसर॥नानाकारसिलीमु
षधाए॥दिसिअरुबिदिसिगगनमहिछाए॥पावकसरछाडेउरघुबीरा॥छनमहुजरेनि
साचरतीरा॥छाडिसितीब्रसक्तिषिसिआई॥बानसंगप्रभुफेरिचलाई॥कोटिन्हचक्र
त्रसूलपबारइ॥बिनुप्रयासप्रभुकाटिनिवारइ॥निफलहोहिंरावनसरकैसे॥षलके
सकलमनोरथजैसे॥तबसतबानसारथीमारेसि॥परेउभूमिजयरामपुकारेसि॥रामकृ
पाकरिसूतउठावा॥तबप्रभुपरमक्रोधकहुपावा॥छंद॥ भए क्रुद्धजुद्धबिरुद्धरघु
पतित्रोनसायककसमसे॥कोदंडधुनिअतिचंडसुनिमनुजादसबमारुतग्रसे॥मंदोदरी
उरकंपकंपतिकमठभूभूधरत्रसे॥चिक्करहिंदिग्गजदसनगहिमहिदेषिकौतुकसुर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ४४ हसे॥ दोहा॥ तानेउ चाप श्रवन लगि छाडे बिसिष कराल॥ राम मार्गन गन चले लहल
हात जनु ब्याल॥ ९१॥ चले बान सपछ जनु उरगा॥ प्रथमहि हत्यो सारथी तुरगा॥ रथ
बिभंजि हति केतु पताका॥ गर्जो अति अंतर बल थाका॥ तुरत आन रथ चढि षिसिआना॥
अस्त्र सस्त्र छाडेसि बिधि नाना॥ निफल होहिं सब उद्यम ताके॥ जिमि परद्रोह निरत म
नसा के॥ तब रावन दस सूल चलावा॥ बाजि चारि महि मारि गिरावा॥ तुरग उठाइ कोपि
रघुनायक॥ षैंचि सरासन छाडे सायक॥ रावन सिर सरोज बनचारी॥ चलि रघुबीर सिली
मुष धारी॥ दस दस बान भाल दस मारे॥ निसरि गए चले रुधिर पनारे॥ श्रवत रुधिर धा
एउ बलवाना॥ प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना॥ तीस तीर रघुबीर पवारे॥ भुजन्हि समेत ४४
सीस महि पारे॥ राम बहोरि भुजा सिर छीने॥ काटत ही पुनि भए नबीने॥ प्रभु बहु बार

बाहु सिर हए॥ कटत झटिति पुनि नूतन भए॥ पुनि पुनि प्रभु काटत भुजं[illegible]सा॥ अति कौ सी

तुकी कोसलाधीसा॥ रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू॥ मानहु अमित केतु अरु राहू॥ छंद॥

जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत सोनित धावहीं॥ रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गि

रन न पावहीं॥ एक एक सर सिर निकर छेदे नभ उडत इमि सोहहीं॥ जनु कोपि दिनक

कर र निकर जहँ तहँ बिधुंतुद पोहहीं॥ दोहा॥ जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होत

अपार॥ सेवत विषय विवर्द्ध जिमि नित नित नूतन मार॥ ९४॥ दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढी

बिसरा मरन भई रिस गाढी॥ गर्जे मूढ महा अभिमानी॥ धाए दसौ सरासन तानी॥ सम

र भूमि दसकंधर कोप्यो॥ बरषि बान रघुपति रथ तोप्यो॥ दंड एक रथ देखि न परेउ॥ जनु नि

हार महु दिनकर दुरेउ॥ हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा॥ तब प्रभु कोपि कार्मुक लीन्हा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
४५

सरनिवारिरिपुकेसिरकाटे॥तेदिसिविदिसिगगनमहिपाटे॥काटेसिरनभमारगधाव
हिं॥जयजयधुनिकरिभयउपजावहिं॥कहंलछिमनसुग्रीवकपीसा॥कहंरघुवीर
कोसलाधीसा॥छंद॥ कहंरामुकहिसिरनिकरधाएदेखिमर्कटभजिचले॥संधानि
धनुरघुवंसमनिहंसिसरन्हिसिरवेधेभले॥सिरमालिकाकरकालिकागहिवृंदवृंद
न्हिवहुमिली॥करिरुधिरसरिमज्जनमनहुंसंग्रामवटपूजनचली॥दोहा॥पुनिद
सकंठक्रुद्धहोइछाडीसक्तिप्रचंड॥चलीविभीषनसन्मुखमनहुंकालकरदंड॥९३॥
आवतदेखिसक्तिअतिघोरा॥प्रनतारतिभंजनपनमोरा॥तुरतविभीषनपाछेमेला॥सन्मुख
रामसहेउसोसेला॥लागिसक्तिमुरछाकछुभई॥प्रभुकृतखेलसुरन्हविकलई॥देखि ४५
विभीषनप्रभुश्रमपायो॥गहिकरगदाक्रुद्धहोइधायो॥रेकुभाग्यसठमंदकुवुद्धे॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तैसुसुरमुनिनागविरुंदे॥ सादरसिवकहुसीसचढाए॥ एकएककेकोटिन्हपाए॥ ते
हिकारनखलअबलगिबाच्यो॥ अवतवकालसीसपरनाच्यो॥ रामविमुखसठचहसिसंप
दा॥ अमकहिहनेसिमांझ उरगदा॥ छंद॥ : उरमांझगदाप्रहारघोरकठोरलागतमहि
परयो॥ दसवदनसोनितस्रवतपुनिसंभारिधायोरिसभरयो॥ द्वौभिरेअतिवलमल्लयु
द्धविरुद्धएकहिएकहनै॥ रघुवीरवलदर्पितविभीषनघालिनहिताकहुगनै॥ दोहा॥
उमाविभीषनरावनहिसन्मुषचितवकिकाउ॥ सोअवभिरतकालज्यौंश्रीरघुवीरप्रभा
उ॥ ९४॥ देषाश्रमितविभीषनभारी॥ धाएउहनूमानगिरिधारी॥ रथतुरंगसारथीनि
पाता॥ हृदयमांझतेहिमारेसिलाता॥ ठाढरहाअतिकंपितगाता॥ गयोविभीषनजहँ
जनत्राता॥ पुनिरावनकपिहतेउपचारी॥ चलेउगगनकपिपुछपसारी॥ गहिसिपु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
९६

छकपि सहित उडाना॥ पुनि फिरि भिरे उप्रबल हनुमाना॥ लरत अकास जुगल सम जो
धा॥ एक हि एक हनत करि क्रोधा॥ सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं॥ कज्जलगिरि सुमेरु
जनु लरहीं॥ बुधि बल निसिचर परै न पार्‍यो॥ तब मारुतसुत प्रभु संभार्‍यो॥ छंद॥ संभारि
श्रीरघुबीर धीर पचारि कपि रावन हन्यो॥ महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कह
जय जय भन्यो॥ हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले॥ रन मत्त रावन सकल सु
भट प्रचंड भुजबल दलमले॥ दोहा॥ तब रघुबीर पचारे धाए कीस प्रचंड॥ कपि दल प्र
बल देखि तेहि कीन्ह प्रगट पाखंड॥ ९५॥ अंतरधान भए छन एका॥ पुनि प्रगटे खल
रूप अनेका॥ रघुपति कटक भालु कपि जेते॥ जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते॥ देखे कपिन्ह ९६
अमित दससीसा॥ जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा॥ भागे बानर धरहि न धीरा॥ त्राहि त्रा

हिलछिमनरघुबीरा॥ दहदिसिधावहिंकोटिन्हरावन॥ गर्जहिंघोरकठोरभयावन॥
डरेसकलसुरचलेपराई॥ जयकैआसतजहुअबभाई॥ सबसुरजितेएकदसकंधर॥ अ
बबहुभएतकहुगिरिकंदर॥ रहेबिरंचिसंभुमुनिज्ञानी॥ जिन्हजिन्हप्रभुमहिमाकछु
ज्ञानी॥ छंद॥: ज्ञानाप्रतापतेरहेनिर्भयकपिन्हरिपुमानेफुरे॥ चलेबिचलिमर्कटभा
लुसकलकृपालपाहिभयातुरे॥ हनुमंतअंगदनीलनलअतिबललरतरनबांकुरे॥
मर्दहिंदसाननकोटिकोटिन्हकपटभूभटअंकुरे॥ दोहा॥: सुरबानरदेखेबिकलहस्यो
कोसलाधीस॥ सजिसारंगएकसरहतेसकलदससीस॥ चौ॥ प्रभुछनमहुमायास
बकाटी॥ जिमिरबिउएजाहितमफाटी॥ रावनएकदेखिसुरहरषे॥ फिरेसुमनबहुप्रभुप
रबरषे॥ भुजउठाइरघुपतिकपिफेरे॥ फिरेएकएकन्हतबटेरे॥ प्रभुबलपाइभालुकपि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

धाए॥ तरल तमकि संजुग महि आए॥ अस्तुति करत देवतेहि देखे। भए उएकै मै इन्हके लेखे
सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल॥ अस कहि कोपि गगन पथ धायल॥ हाहाकार करत सुर भा
गे॥ खलहु जाहु कह मोरे आगे॥ देखि बिकल सुर अंगद धायो॥ कूदि चरन गहि भूमि गिरा
यो॥ छंद॥ः गहि भूमि पाऱ्यो लात माऱ्यो बालिसुत प्रभु पहि गयो॥ संभारि उठि दसकंठ घो
र कठोर रव गर्जत भयो॥ करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु बरषई॥ किए सकल भ
ट घायल भयाकुल देखि निज बल हरषई॥ दोहा॥ तब रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप
काटे बहुत बढे पुनि जिमि तीरथ कर पाप॥ ८७॥ सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी॥ भालु कपि
न्ह रिस भई घनेरी॥ मरत न मूढ़ कटेहु भुज सीसा॥ धाए भालु कोपि भट कीसा॥ बालितन
य मारुति नल नीला॥ बानरराज दुबिद बल सीला॥ बिटप महीधर करहि प्रहारा॥ सोइ गि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रितरु गहि कपिन्ह सो मारा॥ एक नषन्हि रिपु बपुष बिदारी॥ भागि चलहिं एक लातन्ह मारी॥
तब नल नील सिरन्हि चढि गए उ॥ नषन्हि लिलार बिदारत भए उ॥ रुधिर देषि बिषाद उ
र भारी॥ तिन्हहि धरन कहु भुजा पसारी॥ गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं॥ जनु जुग मधुप क
मल बन चरहीं॥ कोपि कूदि द्वौ धरेसि बहोरी॥ महि पटकत भंजे भुजा मरोरी॥ पुनि सकोप
दस धनु कर लीन्हे॥ सरन्हि मारि घायल कपि कीन्हे॥ हनुमदादि मुरछित करि बंदर॥ पाइ
प्रदोष हरष दसकंधर॥ मुरछित देषि सकल कपि बीरा॥ जामवंत धाए उ रनधीरा॥ संग भालु
भूधर तरु धारी॥ मारन लगे पचारि पचारी॥ भए उ क्रुद्ध रावन बलवाना॥ गहि पद महि पट
कै भट नाना॥ देषि भालुपति निज दल घाता॥ कोपि मांझ उर मारेसि लाता॥ छंद॥ ॥ उर
लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ ते महि परा॥ गहि भालु बीसहु कर मनहु कमलनि बसे

लं० निसि मधुकरा॥ मुर्छित बिलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहिं गयो॥ निसि जानि स्यंद
५८ न घालि तेहि तब सूत जतन करत भयो॥ दोहा॥ मुरछा बिगत भालु कपि सब आए प्रभु
पास॥ निसिचर सकल रावनहि घेरि रहे अति त्रास॥ ९८॥ तेहि निसि सीता पहि तब जाई॥ १
त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई॥ सिर भुज बाढि सुनत रिपु केरी॥ सीता उर भई त्रास घनेरी॥ मु
ष मलीन उपजी मन चिंता॥ त्रिजटा सन बोली तब सीता॥ होइहि कहा कहसि किन माता॥
केहि बिधि मरिहि बिस्व दुषदाता॥ रघुपति सर सिर कटेहु न मरई॥ बिधि बिपरीत चरित सब
करई॥ मोर अभाग्य जिआवत ओही॥ जेहि हौं हरि पद कमल बिछोही॥ जेहि कृत कनक
कपट मृग झूठा॥ अजहु सो दैव मोहि पर रूठा॥ जेहि बिधि मोहि दुष दुसह सहाए॥ लछिम ५८
न कहुं कटु बचन कहाए॥ रघुपति बिरह सबिष सर भारी॥ तकि तकि मार बार बहु मारी॥ ऐ

सेहृदयजोरावमम प्राना॥ सोइविधिनाहिजिआवनआना॥ बहुविधिकरविलापजानकी॥ करिकरिसुरतिकृपानिधानकी॥ कहत्रिजटासुनुराजकुमारी॥ उरसरलागतमरैसुरारी॥ प्रभुताते उरहतेनतेही॥ एहिकेहृदयवसतिवैदेही॥ छंद॥: एहिकेहृदयवसजानकीजानकीउरममवासहै॥ ममउदरभुअनअनेकलागतवानसवकरनासहै॥ सुनिवचनहरषविषादमनअतिदेषिपुनित्रिजटाकहा॥ अवमरिहिरिपुएहिविधिसुनहिसुंदरितजहिसंसयमहा॥ दोहा॥: काटतसिरहोइहिविकलछुटिजाइहिहिवध्यान॥ तववरावनहिहृदयमहुमरिहहिरामसुजान॥ ॥ असकहिवहुभांतिसमुझाई॥ पुनित्रिजटानिजभवनसिधाई॥ रामसुभाउसुमिरिवैदेही॥ उपजीविरहव्यथाअतिनेही॥ निसिहिससिहिनिंदतिवहुभांती॥ जुगसमभईनरातिसिराती॥ करतिविलापमनहिमनभारी॥

लं०
४८

एमविरहजानकीदुषारी॥ जवकउभएअविरहअरुदाहू॥ फरकेउवामनयनअरुवाहू॥
सगुनविचारिधरीमनधीरा॥ अवमिलिहहिंकृपालरघुवीरा॥ इहाँअर्द्धनिसिरावनजागा॥
निजसारथिसनषीझनलागा॥ सठरनभूमिछडाइसिमोही॥ धिगधिगअधममंदमतितो
ही॥ तेहिपदगहिवहुविधिसमुझावा॥ भोरभएरथचढिपुनिधावा॥ सुनिआगमनुदसान
नकेरा॥ कपिदलषरभरभएउघनेरा॥ जहँतहँभूधरविटपउपारी धाएकटकटाइभट
भारी॥ छंद ॥: धाएजोमर्कटविकटभालुकरालकरभूधरधरा॥ अतिकोपकरहिंप्रहा
रमारतभजिचलेरजनीचरा॥ विचलाइदलवलवंतकीसन्हघेरिपुनिरावनलियो॥ च
हुँदिसिचपेटन्हिमारिनषन्हिविदारितनव्याकुलकियो॥ दोहा ॥: देषिमहामर्कटप्रव ४८
लरावनकीन्हविचार॥ अंतरहितहोइनिमिषमहुँकृतमायाविस्तार॥१००॥ तोमरछंद॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जवकीन्हतेहिपाषंड॥भएप्रगटजंतुप्रचंड॥वेतालभूतपिसाच॥करधरेधनुनाराच॥जो
गिनिगहेंकरवाल॥एकहाथमनुजकपाल॥करिसद्यसोनितपान॥नाचहिंकरहिंवहुगा
न॥धरुमारुवोलहिंघोर॥रहिपूरिधुनिचहुँओर॥मुषवायधावहिंषान॥तवलगेकीसपरा
न॥जहँजाहिंमर्कटभागि॥तहँवरतदेषहिंआगि॥भएविकलवानरभालु॥पुनिलागवरषै
वालु॥जहँतहँथकितकरिकीस॥गर्जेउवहुरिदससीस॥लछिमनकपीससमेत॥भएस
कलवीरअचेत॥हाराममहारघुनाथ॥कहिसुभटमीजहिंहाथ॥एहिविधिसकलवलतो
रि॥तेहिंकीन्हकपटवहोरि॥प्रगटेसिविपुलहनुमान॥धाएगहेपाषान॥तिन्हरामघेरेजा
इ॥चहुँदिसिवरूथवनाइ॥मारहुधरहुजनिजाइ॥कटकटहिंपूंछउठाइ॥दहदिसिलं
गूरविराज॥तेहिंमध्यकोसलराज॥छंद॥ःतेहिंमध्यकोसलराजसुंदरस्यामतनसोभा

लं० ५०

लही॥जनुइंद्रधनुषअनेककीबरवारितुंगतमालहीं॥प्रभुदेषिहरषविषादउरसुरबद
तजयजयजयकरी॥रघुवीरएकहितीरकोपिनिमेषमहुमायाहरी॥मायाविगतकपिभालु
हरषेविटपगिरिगहिसवफिरे॥सरनिकरछाडेरामरावनवांहुसिरपुनिमहिगिरे॥श्री
रामरावनसमरचरितअनेककल्पजोगावहीं॥सतसेषसारदनिगमकवितेउतदपिपा
रनपावहीं॥दोहा॥: ताकेगुनगनकछुकहेजडमतितुलसीदास॥जिमिनिजबलअनु
रूपतेमाछीउडैअकास॥काटेसिरभुजवारबहुमरतनभटलंकेस॥प्रभुक्रीडतसुरसिद्ध
मुनिव्याकुलदेषिकलेस॥१०१॥कोटिसिरपुनिहोहिंअपारा॥भोगाकरतजिमिवाढहिमा
रा॥काटतवढहिसीससमुदाई॥जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई॥मरइनरिपुश्रमभएउ ५०
विसेषा॥रामविभीषनतनतवदेषा॥उमाकालमरजाकीईछा॥सोप्रभुजनकरप्रीतिप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रीछा॥ सुनुसरवग्यचराचरनायक॥ प्रनतपालसुरमुनिसुषदायक॥ नाभिकुंडपियूषवस
याके॥ नाथजियतरावनुवलताके॥ सुनतविभीषनवचनकृपाला॥ हरषिगहेकरवानकरा
ला॥ असुभहोनलागेतववनाना॥ रोवहिषरस्टकालवहुस्वाना॥ वोलहिषगजगआरतिहे
तु॥ प्रगटभएनभजहंतहंकेतु॥ दसदिसिदाहहोनअतिलागा॥ भएउपरववितुरविउप
रागा॥ मंदोदरिउरकंपतिभारी॥ प्रतिमाश्रवहिनयनमगवारी॥ छंद॥ : प्रतिमारुदहि
पविपातनभअतिवातवहडोलतिमही॥ वरषहिवलाहककरुधिरकचरजअसुभअतिस
ककोकही॥ उतपातअमितविलोकिनभसुरविकलवोलहिजयजए॥ सुरसभयजानिकृ
जोर पालरघुपतिचापसरजतभए॥ दोहा॥ : षेचिसरासनश्रवनलगिछाडेसरएकतीस॥ रघुना
यकसायकचलेमानहुकालफनीस॥ १०२॥ सायकएकनाभिसरसोषा॥ अपरलगेभुज

लं० ५९

सिरकरिरोषा॥लैसिरबाहुचलेनाराचा॥सिरभुजहीनरुंडमहिनाचा॥धरनिधसैधरधावप्र
चंडा॥तबसरहतिप्रभुकृतजुगखंडा॥गरजेउमरतघोररवभारी॥कहाँरामरनहतौंप्रचारी॥
डोलीभूमिगिरतदसकंधर॥छुभितसिंधुसरिदिग्गजभूधर॥धरनिपरेउद्वौखंडबढ़ाई॥चा
पिभालुमर्कटसमुदाई॥मंदोदरिआगेंभुजसीसा॥धरिसरचलेजहाँजगदीसा॥प्रबिसेसब
निषंगमहुँजाई॥देखिसुरन्हदुंदुभीबजाई॥तासुतेजसमानप्रभुआनन॥हरषेदेखिसंभु
चतुरानन॥जयजयधुनिपूरीब्रह्मंडा॥जयरघुबीरप्रबलभुजदंडा॥बरषहिंसुमनदेवमु
निबृंदा॥जयकृपालजयजयतिमुकुंदा॥छंद॥ जयकृपाकंदमुकुंदद्वंदहरनसरनसु
खप्रदप्रभो॥खलदलबिदारनपरमकारनकारुनीकसदाबिभो॥सुरसुमनबरषहिंहरष ५९
संकुलबाजदुंदुभिगहगही॥संग्रामअंगनरामअंगअनंगबहुसोभालही॥सिरजटामुकु

टपुसुजनकिंचकिंचअतिमनोहरराजही॥ जनुनीलगिरिपरतडितपटलसमेतउडुगनभ्रा
जहीं॥ भुजदंडसरकोदंडफेरतरुधिरकनतनअतिवने॥ जनुरायमुनीतमालपरबैठीविपुल
सुषआपने॥ दोहा॥ः कृपादृष्टिकरिवृष्टिप्रभुअभयकिएसुरवृंद। भालुकीससबहरषे
जयसुषधाममुकुंद॥ दो॥१०३॥ पतिसिरदेषतमंदोदरी॥ मुरछितविकलधरनिषसिपरी॥ जुवति
वृंदरोवतउठिधांईं॥ तेहिउठाइरावनपहिंआईं॥ पतिगतिदेषितेकरहिंपुकारा॥ छूटेक
चनहिवपुषसंभारा॥ उरताडनाकरहिंविधिनाना॥ रोवतकरहिंप्रतापवषाना॥ तवबलना
थडोलनितधरनी॥ तेजहीनपावकससितरनी॥ सेषकमठसहिसकहिंनभारा॥ सोतनुभूमि
परेउभरिछारा॥ वरुनकुवेरसुरेससमीरा॥ रनसन्मुषधरकाहुंनधीरा॥ भुजबलजितेहुका
लजमसांईं। आजुपरेहुअनाथकीनांईं॥ जगतविदिततुम्हारिप्रभुताई॥ सुतपरिजनवल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं° ५२

बरनिनजाई॥ रामबिमुखअसहालतुम्हारा॥ रहानकोउकुलरोवनिहारा॥ तवबसबिधिप्रपं
चसबनाथा॥ सभयदिसिपनितनावहिंमाथा॥ अबतवसिरभुजजंबुकखाहीं॥ रामबिमुखय
हअनुचितनाहीं॥ कालबिबसपतिकहानमाना॥ अगजगनाथमनुजकरिजाना॥ छंद॥
जानेउमनुजकरिदनुजकाननदहनपावकहरिस्वयं॥ जेहिनमतसिवब्रह्मादिसुरपिय
भजेहुनहिंकरुनामयं॥ आजन्मतेपरद्रोहरतपापौघमयतवतनुअयं॥ तुम्हहूदियोनि
जधामराममनमामिब्रह्मनिरामयं॥ दोहा॥ अहहनाथरघुनाथसमकृपासिंधुनहिंआन
जोगिबृंददुर्लभगतितोहिदीन्हिभगवान॥ १०४॥ मंदोदरीबचनसुनिकाना॥ सुरमुनि
सिद्धसबन्हिसुखमाना॥ अजमहेसनारदसनकादी॥ जेमुनिबरपरमारथबादी॥ भरिलो ५२
चनरघुपतिहिनिहारी॥ प्रेममगनसबभए सुखारी॥ रुदनकरतदेखींसबनारी॥ गए

उबिभीषनमनदुखभारी॥ बंधुदसाबिलोकिदुखकीन्हा॥ तवप्रभुअनुजहिआयसुदीन्हा
लछिमनतेहिबहुबिधिसमुझायो॥ बहुरिबिभीषनप्रभुपहिआयो॥ कृपादृष्टिप्रभुता
हिबिलोका॥ करहुक्रियापरिहरिसबसोका॥ कीन्हिक्रियाप्रभुआयसुमानी॥ बिधि
वतदेसकालजियजानी॥ दोहा॥ मंदोदरीआदिसबदेइतिलांजलिताहि॥ भवन
गईरघुपतिगुनगनवरनतमनमाहिं॥ १०५॥ आइबिभीषनपुनिसिरुनायो॥ कृपासिं
धुतबअनुजबोलायो॥ तुम्हकपीसअंगदनलनीला॥ जामवंतमारुतिनयसीला॥
सबमिलिजाहुबिभीषनसाथा॥ सारेहुतिलककहेरघुनाथा॥ पितावचनमैंनगरन
आवौं॥ आपुसरिसकपिअनुजपठावौं॥ तुरतचलेकपिसुनिप्रभुवचना॥ कीन्हीजाइ
तिलककीरचना॥ सादरसिंहासनबैठारी॥ तिलकसारिअस्तुतिअनुसारी॥ जोरिपा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
५३ निसवहींसिरनाए॥ सहितविभीषनप्रभुपहिंआए॥ तवरघुवीरवोलिकपिलीन्हे॥ कहि
प्रियवचनसुषीसवकीन्हे॥ छंद॥ किरसुषींकहिवानीसुधासमवलतुम्हारेरिपुहयो
पायोविभीषनराजतिहुंपुरजसतुम्हारोनितनयो॥ मोहिसहितसुभकीरतितुम्हारी
परमप्रीतिजोगाइहैं॥ संसारसिंधुअपारपारप्रयासविनुनरपाइहैं॥ दोहा॥ प्रभुके
वचनश्रवनसुनिनहिंअघाहिंकपिपुंज॥ वारवारसिरुनावहिंगहहिंसकलपदकं
ज॥१०६॥ पुनिप्रभुवोलिलियाहनुमाना॥ लंकाजाहुकहेउभगवाना॥ समाचारजान
किहिसुनावहु॥ तासुकुसललैतुम्हचलिआवहु॥ तवहनुमंतनगरमहंआए॥ सुनिनि
सिचरीनिसाचरधाए॥ वहुप्रकारतिन्हपूजाकीन्ही॥ जनकसुतादेषाइपुनिदीन्ही॥ ५३
दूरिहितेप्रनामकपिकीन्हा॥ रघुपतिदूतजानकीचीन्हा॥ कहहुतातप्रभुकृपानिकेता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कुसलअनुजकपिसेनसमेता॥सवविधिकुसलकोसलाधीसा॥मातुसमरजीतैउदससी
सा॥अविचलराजुविभीषनपायो॥सुनिकपिवचनहरषउरछायो॥छंद॥ ः॥अतिहरष
मनतनपुलकलोचनसजलकहपुनिपुनिरमा॥कादेउँतोहित्रैलोकमहकपिकिमपि
नहिवानीसमा॥सुनुमातुमैपायोअखिलजगराजुआजुनसंसयं॥रनजीतिरिपुदलवं
धुजुतपस्यामिराममनामयं॥दोहा॥ःसुनुसुतसदगुनसकलतवहृदयवसउहनुमं
त॥सानुकूलकोसलपतिरहहुसमेतअनंत॥१०७॥अवसोइजतनकरहुतुम्हताता
देखौंनयनस्याममृदुगाता॥तवहनुमानरामपहिजाई॥जनकसुताकेकुसलसुनाई
सुनिसंदेसभानुकुलभूषन॥वोलिलिएजुवराजविभीषन॥मारुतसुतकेसंगसिधाव
हु॥सादरजनकसुतहिलैआवहु॥तुरतहिसकलगएजहंसीता॥सेवहिसवनिसिचरी

लं०
५८

विनीता।। वेगिविभीषनतिन्हहिसिषायो।। तिन्हवहुविधिमज्जनुकरवायो।। वहुप्रकारभू
षनपहिराए।। सिविकारुचिरसाजिपुनिल्याए।। तापरहरषिचढीवैदेही।। सुमिरिराम
सुषधामसनेही।। वेतपानिरछकचहुंपासा।। चलेसकलमनपरमहुलासा।। देषनकी
सभालुसवआए।। रछककोपिनिवारनधाए।। कहरघुवीरकहाममानहु।। सीतहिस
षापयादेंआनहु।। देषहुंकपिजननीकीनांई।। विहसिकहारघुनाथगोसांई।। सुनिप्रभु
वचनभालुकपिहरषे।। नभतेसुरन्हसुमनवहुवरषे।। सीताप्रथमअनलमहुंराषी।। प्र
गटकीन्हिचहअंतरसाषी।। दोहा।। तेहिकारनकरुनानिधिकहेकछुकदुर्वाद।। सुन
तजातुधानीसवलागीकरैविषाद।।१०८।। प्रभुकेवचनसीसधरिसीता।। वोलीमनक्रमवच ५८
नपुनीता।। लछिमनहोहुधरमकेनेगी।। पावकप्रगटकरहुतुम्हवेगी।। सुनिलछिमन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सीताकै वानी॥ बिरह विवेक धरम नय सानी॥ लोचन सजल जोरि कर दोउ॥ प्रभु सन क
छु कहि सकत न वोऊ॥ देखि राम रुख लछिमन धाए॥ पावक प्रगटि काठ बहु लाए॥ पा
वक प्रबल देखि वैदेही॥ हृदय हरष नहि भय कछु तेही॥ जौं मन बच क्रम मम उर माहीं
तजि रघुवीर आन गति नाहीं॥ तौ कृसानु सब कै गति जाना॥ मो कहु होउ श्रीखंड समाना॥
॥ छंद॥: श्रीखंड सम पावक प्रवेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली॥ जय कोसलेस महेस वं
दित चरन रति अति निर्मली॥ प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महु जरे॥ प्रभु
चरित काहु न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहि खरे॥ धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य स्रुति
जग विदित जो॥ जिमि छीर सागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो॥ सो राम वाम विभाग
राजति रुचिर अति सोभा भली॥ नव नील नीरज निकट मानहु कनक पंकज की कली॥ ३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ५५

॥दोहा॥ः बरषहिं सुमन हरषि सुर बाजहिं गगन निसान॥ गावहिं किंनर सुरबधू नाच
हिं चढ़ीं बिमान॥ जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार॥ देषि भालु कपि हरषे जय रघु
पति सुषसार॥१०४॥ तब रघुपति अनुसासन पाई॥ मातलि चले उ चरन सिरु नाई॥ आ
ए देव सदा स्वारथी॥ बचन कहहिं जनु परमारथी॥ दीनबंधु दयाल रघुराया॥ देव की
न्हि देवन्ह पर दाया॥ बिस्व द्रोह रत यह षल कामी॥ निज अघ गयो कुमारगगामी॥ तुम्ह
समरूप ब्रह्म अबिनासी॥ सदा एकरस सहज उदासी॥ अकल अगुन अज अनघ अना
मय॥ अजित अमोघ सक्ति करुनामय॥ मीन कमठ सूकर नरहरी॥ बामन परसुराम ब
पुधरी॥ जब जब नाथ सुरन्ह दुष पायो॥ नाना तनु धरि तुम्हइं नसायो॥ यह षल मलिन
सदा सुरद्रोही॥ काम लोभ मद रत अति कोही॥ अधम सिरोमनि तव पद पावा॥ यह हम ५५

रेमनविसमयआवा॥ हमदेवतापरमअधिकारी॥ स्वारथरतप्रभुभगतिविसारी॥ भवप्रवा
हसंततहमपरे॥ अवप्रभुपाहिसरनअनुसरे॥ दोहा॥ : करिविनतीसुरसिद्धसबरहेजहँ
तहँकरजोरि॥ अतिसप्रेमतनपुलकितअस्तुतिकरतबहोरि॥ ११०॥ जयरामसदासुषधा
महरे॥ रघुनायकसायकचापधरे॥ भववारनदारनसिंहप्रभो॥ गुनसागरनागरनाथवि
भो॥ १॥ तनकामअनेकअनूपछवी॥ गुनगावतसिद्धमुनिंदकवी॥ जसपावनरावननागम
हा॥ षगनाथजथाकरिकोपगहा॥ २॥ जनरंजनभंजनसोकभयं॥ गतक्रोधसदाप्रभुबोध
मयं॥ अवतारउदारअपारगुनं॥ महिभारविभंजनज्ञानघनं॥ ३॥ अजव्यापकमेकमना
दिसदा॥ करुनाकररामनमामिमुदा॥ रघुवंसविभूषनदूषनहा॥ कृतभूपविभीषनदी
नरहा॥ ४॥ गुनज्ञाननिधानअमानअजं॥ नितरामनमामिविभुंविरजं॥ भुजदंडप्रचंड

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
५६

प्रतापबलं॥खलवृंदनिकंदमहाकुसलं॥५॥विनुकारनदीनदयालहितं॥छविधामनमामि न
रमासहितं॥भवतारनकारनकाजपरं॥मनसंभवदारुनदोषहरं॥६॥सरचापमनोहरत्रोन
धरं॥जलजारुनलोचनभूपवरं॥सुखमंदिरसुंदरश्रीरमनं॥मदमारमुधाममतासमनं॥
७॥अनवद्यअखंडनगोचरगो सवरूपसदासवहोइनगो॥इतिवेदवदंतिनदंतकथा॥र
विआतपभिन्नमभिन्नजथा॥८॥कृतकृत्यविभोसववानरये॥निरखंतितवाननसादर
ये॥धिगजीवनदेवसरीरहरे॥तवभक्तिविनाभवभूलिपरे॥९॥अवदीनदयालदयाक
रिये॥मतिमोरिविभेदकरीहरिये॥जेहितेविपरीतक्रियाकरिये॥दुखसोसुखमानिसुखी
चरिये॥१०॥खलखंडनमंडनरम्यछमा॥पदपंकजसेवितसंभुउमा॥नृपनायकदेवर ५६
दानमिदं॥चरनांवुजप्रेमसदासुभदं॥११॥दोहा॥विनयकीन्हिचतुराननप्रेमपुलक

अतिगात॥ सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात॥ ११४॥ तेहि अवसर दसरथ तहँ आ
ए॥ तनय बिलोकि नयन जल छाए॥ अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा॥ आसिर्बाद पिता
तब दीन्हा॥ तात सकल तव पुन्य प्रभाउ॥ जीत्यो अजय निसाचर राउ॥ सुनि सुत बचन
प्रीति अति बाढी॥ नयन सलिल रोमावलि ठाढी॥ रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना॥ चितै पि
तहि दीन्हेउ दृढ ज्ञाना॥ ताते उमा मोछ नहि पायो॥ दसरथ भेद भगति मन लायो॥ सगु
नोपासक मोछ न लेहीं॥ तिन्ह कहँ राम भगति निज देहीं॥ बारबार करि प्रभुहि प्रना
मा॥ दसरथ हरषि गए सुरधामा॥ दोहा॥ अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधी
स॥ सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुरईस॥ ११५॥ छंद तोमर॥ जय राम सोभा धाम
दायक प्रनत बिश्राम॥ धृत त्रोन बर सर चाप॥ भुजदंड प्रबल प्रताप॥ जय दूषनारि खरारि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ५८

मर्द्दननिसाचरधारि ॥ यहदुष्टमारे उनाथ ॥ भए देवसकलसनाथ ॥ जँह रतधरनीभार ॥ म य
हिमा उदार अपार ॥ जयरावनारि कृपाल ॥ किए जातुधान विहाल ॥ लंके स अतिवलगर्वे
किए वस्य सुरगंधर्व ॥ मुनिसिद्ध नर षग नाग ॥ हठि पंथ सव के लाग ॥ पर द्रोह रत अति दु
ष्ट ॥ पायो सो फल पापिष्ट ॥ अव सुनु दीनदयाल ॥ राजीवनयन विसाल ॥ मोहि रहा अ
ति अभिमान ॥ नहि को उ मोहि समान ॥ अव देषि प्रभु पद कंज ॥ गत मान प्रद दुष पुंज ॥
को उ व्रह्म निर्गुन ध्याव ॥ अव्यक्त जेहि श्रुति गाव ॥ मोहि भाव कोसल भूप ॥ श्रीराम सगुन स
रूप ॥ वैदेहि अनुज समेत ॥ मम हृदय करहु निकेत ॥ मोहि जानिए निज दास ॥ दे भगति रमा
निवास ॥ छंद ॥ दे भगति रमानिवास त्रास हरन सरन सुषदायकं ॥ सुषधाम राम नमामि ५८
काम अनेक छवि रघुनायकं ॥ सुरवृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलित वलं ॥ व्रह्मादि

संकरसेव्यरामनमामिकरुनाकोमलं॥ दोहा॥ ॥ अवकरिकृपाविलोकिमोहिआयसुदे
हुकृपाल॥ काहकरौंसुनिप्रियबचनबोलेदीनदयाल॥ ११३॥ सुनुसुरपतिकपिभालुह
मारे॥ परेभूमिनिसिचरन्हिजेमारे॥ ममहितलागितजेइन्हप्राना॥ सकलजियाउसुरेस
सुजाना॥ सुनुखगेसप्रभुकेयहबानी॥ अतिअगाधजानहिंमुनिज्ञानी॥ प्रभुसकत्रिभुअ
नमारिजिआई॥ केवलसक्रहिंदीन्हिबडाई॥ सुधाबरषिकपिभालुजिआए॥ हरषिउठे
सबप्रभुपहिंआए॥ सुधाबृष्टिभैदुहुँदलऊपर॥ जिएभालुकपिनहिंरजनीचर॥ रामा
कारभएतिन्हकेमन॥ मुक्तभएछूटेभवबंधन॥ सुरअंसिकसबकपिअरुरीछा॥ जिए
सकलरघुपतिकीईछा॥ रामसरिसकोदीनहितकारी॥ कीन्हेमुकुतनिसाचरझारी॥
खलमलधामकामरतरावन॥ गतिपाईजोमुनिबरपावन॥ दोहा॥ ॥ सुमनबरषिसब

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ५८

मसुखलेचढिचढिसुरविमान॥ देखिसुखीसबप्रभुपहिआएसंभुसुजान॥ परमप्रीति
करजोरिजुगनलिननयनभरिवारि॥ पुलकिततनगदगदगिराविनयकरतत्रिपुरारि॥
११४॥ मामभिरक्षयरघुकुलनायक॥ धृतवरचापरुचिरकरसायक॥ मोहमहाघनपट
लप्रभंजन॥ संसयविपिनअनलसुररंजन॥ अगुनसगुनगुनमंदिरसुंदर॥ भ्रमतमप्र
बलप्रतापदिवाकर॥ कामक्रोधमदगजपंचानन॥ बसहुनिरंतरजनमनकानन॥ वि
षयमनोरथपुंजकंजवन॥ प्रबलतुषारउदारपारमन॥ भववारिधिमंदरपरमंदर॥ वा
रयतारयसंसृतिदुस्तर॥ स्यामगातराजीवविलोचन॥ दीनबंधुप्रनतारतिमोचन॥ अ
नुजजानकीसहितनिरंतर॥ बसहुराममृपममअभ्यंतर॥ मुनिरंजनमहिमंडलमं
डन॥ तुलसिदासप्रभुत्रासविखंडन॥ दोहा॥ नाथजबहिंकोसलपुरिहोइहितिलक ५८

तुम्हार॥ कृपासिंधु मैं आउव देखन चरित उदार॥ ११५॥ करि विनती जव संभु सिधाए॥ नव
प्रभु निकट विभीषन आए॥ नाइ चरन सिर कह म्रदु वानी॥ विनय सुनहु प्रभु सारंगपा
नी॥ सकुल सदल प्रभु रावन मार्‌यो॥ पावन जस त्रिभुवन विस्तार्‌यो॥ दीन मलीन हीन म
ति जाती॥ मो पर कृपा कीन्हि वहु भांती॥ अव जन ग्रह पुनीत प्रभु कीजे॥ मज्जन करिय स
मर स्रम छीजे॥ देखि कोस मंदिर संपदा॥ देहु कृपाल कपिन्ह कहं मुदा॥ सव विधि नाथ मो
हि अपनाइय॥ पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइय॥ सुनत वचन म्रदु दीनदयाला॥ सज
ल भए दो उ नयन विसाला॥ दोहा॥ः तोर कोस ग्रह मोर सव सत्य वचन सुनु भ्रात॥ भरत
दसा सुमिरित मोहि निमिष कल्प सम जात॥ तापस वेष गात कृस जपत निरंतर मोहि॥ देखौं
वेगि सो जतन करु सखा निहोरौं तोहि॥ वीते अवधि जाउं जौं जियत न पावौं वीर॥ सुमिरत अनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
५८

नुजप्रीतिप्रभुपुनिपुनिपुलकसरीर॥कोउकल्पभरिराजतुम्हमोहिसुमिरेहुमनमाहिं॥
पुनिममधामपाइहहुजहाँसंतसबजाहिं॥११६॥सुनतविभीषनबचनरामके॥हरषिगहे
पदकृपाधामके॥बानरभालुसकलहरषाने॥गहिप्रभुपदगुनबिमलबखाने॥बहुरिवि
भीषनभवनसिधायो॥मनिगनबसनबिमानभरायो॥लैपुष्पकप्रभुआगेराषा॥हसिक
रिकृपासिंधुतबभाषा॥चढिबिमानसुनुसखाविभीषन॥गगनजाइबरषहुपटभूषन॥न
भपरजाइविभीषनतबहीं॥बरषिदिएमनिअंबरसबहीं॥जोइजोइमनभावैसोइलेहीं॥म
निमुखमेलिडारिकपिदेहीं॥हसेरामश्रीअनुजसमेता॥परमकौतुकीकृपानिकेता॥दो
हा॥ मुनिजेहिध्याननपावहिंनेतिनेतिकहवेद॥कृपासिंधुसोइकपिन्हसनकरत ५८
अनेकबिनोद॥उमाजोगजपदानतपनानाब्रतमषनेम॥रामकृपानहिकरहिंतसिजि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सिनिजकेबलप्रेम॥११७॥भालुकपिन्हपटभूषनपाए॥पहिरिपहिरिरघुपतिपहिंआए
नानाजिनसदेखिसबकीसा॥पुनिपुनिहसतकोसलाधीसा॥चितैसबन्हिपरकीन्हीदा
या॥बोलेमृदुलबचनरघुराया॥तुम्हरेंबलमैंरावनुमार्यो॥तिलकबिभीषनकहँपुनिसा
र्यो॥निजनिजग्रहअबतुम्हसबजाहू॥सुमिरेहुमोहिडरपहुजनिकाहू॥सुनतबचनप्रे
माकुलबानर॥जोरिपानिबोलेसबसादर॥प्रभुजोइकहहुतुम्हहिसबसोहा॥हमरेंहोतब
चनसुनिमोहा॥दीनजानिकपिकिएसनाथा॥तुम्हत्रैलोकईसरघुनाथा॥सुनिप्रभुबचन
लाजहममरहीं॥मसककहूँखगपतिहितकरहीं॥देखिरामरुखबानररीछा॥प्रेममगनन
हिंग्रहकैईछा॥दोहा॥प्रभुप्रेरितकपिभालुसबरामरूपउरराखि॥हरषबिषादसहि
तचलेबिनयबिबिधबिधिभाषि॥कपिपतिनीलरीछपतिअंगदनलहनुमान॥सहित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ११० विभीषनअपरजेजूथपकपिबलवान॥कहिनसकहिंकछुप्रेमबसभरिभरिलोचनबारि॥
सनमुषचितवहिंरामतननयननिमेषनिवारि॥११८॥अतिसैप्रीतिदेषिरघुराई॥लीन्हेसक
कलविमानचढाई॥मनमहुंविप्रचरननसिरुनायो॥उत्तरदिसिहिविमानुचलायो॥च
लतविमानकोलाहलहोई॥जयरघुवीरकहैसबकोई॥सिंहासनअतिउच्चमनोहर॥
श्रीसमेतप्रभुबैठेतापर॥राजतरामसहितभामिनी॥मेरुश्रृंगजनुघनदामिनी॥रुचिर
विमानचलेउअतिआतुर॥कीन्हीसुमनवृष्टिहरषेसुर॥परमसुषदचलित्रिबिधब
यारी॥सागरसरसरिनिर्मलबारी॥सगुनहोहिंसुंदरचहुपासा॥मनप्रसन्ननिर्मलनभ
आसा॥कहरघुवीरदेषुरनसीता॥लछिमनइहांहत्योइंद्रजीता॥हनूमानअंगदके ११०
मारे॥रनमहिपरेनिसाचरभारे॥कुंभकरनरावनदोउभाई॥इहांहतेसुरमुनिदुषदा

ई॥दोहा॥: इहाँसेतुबाँध्योअरुथाप्योसिवसुखधाम॥सीतासहितकृपानिधिसंभुहि
कीन्हप्रनाम॥जहँजहँकृपासिंधुबनकीन्हबासबिश्राम॥सकलदेखाएजानकिहिकहे
सबन्हिकेनाम॥१२०॥तुरतबिमानतहाँचलिआवा॥दंडकबनजहँपरमसुहावा॥कुं
भजादिमुनिनायकनाना॥गएरामसबकेंअस्थाना॥सकलरिषिन्हसनपाइअसीसा॥
चित्रकूटआएजगदीसा॥तहँकरिमुनिन्हकेरसंतोषा॥चलाबिमानुतहाँतेचोषा॥
बहुरिरामजानकिहिदेखाई॥जमुनाकलिमलहरनिसोहाई॥पुनिदेखीसुरसरीपुनीता॥
रामकहाप्रनामकरुसीता॥तीरथपतिपुनिदेखुप्रयागा॥निरषतजन्मकोटिअघभागा॥
देखुपरमपावनिपुनिबेनी॥हरनिसोकहरिलोकनिसेनी॥पुनिदेखुअवधपुरीअतिपाव
नि॥त्रिबिधतापभवरोगनसावनि॥दोहा॥: सीतासहितअवधकहुँकीन्हकृपालप्रना॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० म॥ सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम॥ पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी हरषित मज्ज न
नु कीन्ह॥ कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहुँ दान बिबिध बिधि दीन्ह॥ १२०॥ प्रभु हनुमंतहि कहा
बुझाई॥ धरि बटु रूप अवधपुर जाई॥ भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु॥ समाचार लै तुम्ह चलि
आएहु॥ तुरत पवनसुत गवनत भएउ॥ तब प्रभु भरद्वाज पहिं गएउ॥ नाना बिधि मुनि पू
जा कीन्ही॥ अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही॥ मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी॥ चढ़ि बिमान
प्रभु चले बहोरी॥ इहाँ निषाद सुना प्रभु आए॥ नाव नाव कहँ लोग बोलाए॥ सुरसरि नाघि
जान तब आयो॥ उतरेउ तट प्रभु आयसु पायो॥ तब सीता पूजी सुरसरी॥ बहु प्रकार पुनि च
रननि परी॥ दीन्हि असीस हरषि मन गंगा॥ सुंदरि तव अहिवात अभंगा॥ सुनत गुहा धायो ६९
प्रेमाकुल॥ आएउ निकट परम सुख संकुल॥ प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही॥ परेउ अवनि तन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं० ६६

सुधिनहितेही॥ प्रीतिपरमकिलोकिरघुराई॥ हरषिउठाइलियोउरलाई॥ छंद॥ः लियो
हृदयलाइकृपानिधानसुजानरायरमापती॥ बैठारिपरमसमीपबूझीकुसलसोकरबेनती
अबकुसलपदपंकजबिलोकिबिरंचिसंकरसेव्यजे॥ सुखधामपूरनकामरामनमामिरामनमा
मिते॥ सबभांतिअधमनिषादसोहरिभरतज्योंउरलाइयो॥ मतिमंदतुलसीदाससोप्रभुमोहब
सबिसराइयो॥ यहरावनारिचरित्रपावनरामपदरतिप्रदसदा॥ कामादिहरबिज्ञानकरसुरसि
द्धमुनिगावहिंमुदा॥ दोहा॥ सत्यकियरघुबीरकेचरितजेसुनहिसुजान॥ बिजयबिबेकबिभूति
नितनिन्हहिंदेहिंभगवान॥ यहकलिकालमलायतनमनकरिदेखुबिचार॥ श्रीरघुनाथनाम
तजिनाहिनआनअधार॥ १२१॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेविमलवि
ज्ञानसंपादिनीनामषष्ठःसोपानःसमाप्तः॥ शुभमस्तुसंवत् १८८१॥ चैत्रकृष्णदसम्यां॥ १०॥ ॥०

३१ ६६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative